موضوع الخطبة : سلسلة خطب مختصرة عن نواقض الإسلام – الناقض الأول (الشرك بالله)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:इस्लाम भंजक

प्रथम भंजक: (अल्लाह के साथ शिर्क करना)

سلسلة خطب مختصرة عن نواقص الإسلام – الناقض الأول (الشرك بالله)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

समस्त प्रार्थनाओं को केवल अल्लाह ही के लिए करने पर समस्त शरीअ़तों की सहमति है

अल्लाह के बदो!अल्लाह तअ़ाला से डरो और उसका आदर करो,उस की आज्ञा मानो,और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन मामलों में समस्त आकाशीय पुस्तकों की सहमति है उन में यह भी है कि:समस्त प्रकार की प्रार्थनाएं केवल अल्लाह ही के लिए करना अनिवार्य है,अल्लाह तअ़ाला का फरमान है:

وما أرسلنا من قبلك مِن رسول إلا نوحي إليه أنه **لا إله إلا أنا** فاعبدون

अर्थात:और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु अउ की ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है,अत: मेरी ही इबादत करो।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया: ﴿فاعبد الله **مخلصا** له الدين﴾

अर्थात:अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

शैख अ़ब्दुर रह़मान अलसादी रह़िमहुल्लाह[1] इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:अर्थात: अपने धर्म को पूरे रूप से अल्लाह के लिए शुद्ध रखो,चाहे बाह्य अह़काम हों अथवा आंतरिक अह़काम,इस्लाम,ईमान और एह़सान (प्रत्येक श्रेणी को अल्लाह ही के लिए शुद्ध रखो),वह इस प्रकार से कि अल्लाह के लिए समस्त प्रार्थनाओं को शुद्ध रखो,उन के द्वारा अल्लाह की प्रसन्नता मांगो,इस के अतिरिक्त कोई और उद्देश्य न रखो।

अल्लाह का कथन: (आप अल्लाह ही की प्रार्थना करें,उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हुए) यह एखलास (सत्यता) का आदेश और इस बात की स्पष्टता है कि जिस प्रकार से अल्लाह तआ़ला के लिए प्रत्येक प्रकार का कमाल है और प्रत्येक प्रकार से वह अपने बंदों पर कृपालु एवं उपकार करने वाला है,इसी प्रकार से उस के लिए शुद्ध धर्म है जो प्रत्येक प्रकार के मलिनता एवं मिलावट से पवित्र है,यही वह धर्म है जिसे उस ने अपने लिए पसंद फरमाया,इस धर्म को अपने चिन्हित बंदों के लिए पसंद फरमाया,उन को इस धर्म का आदोश दिया,क्योंकि यह धर्म इस बात पर आधारित है कि अल्लाह की प्रार्थना की जाए,उस के प्रेम,भय,आशा एवं विनम्रता व निकटता

---

[1] आप अ़ल्लामा फक़ीह मोफस्सिर शैख अ़ब्दुर रह़मान बिन नासिर अलसादी हैं,आप ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं,इस्लामी शिक्षाओं में आप को गहरी बसीरत (अंतर्दृष्टि) प्राप्त थी,आप का निधन 1376 हिजरी में हुआ,आप की जीवनी आप के क्षात्र शैख अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर रह़मान अलबसाम के कलम से पढ़ने के लिए देखें:,आप की जीवनी अन्य पुस्तकों में भी उल्लेख की गई है।

जैसी प्रार्थनाओं के द्वारा,बंदों को अपने उद्दश्यों की प्राप्ति के लिए उसी से मांगना चाहिए,यही वह प्रार्थना है जो दिलों के सुधार,शुद्धता एवं पवित्रता का कारण है,और किसी भी प्रार्थना में उस के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) नहीं करने देती,क्योंकि अल्लाह तआ़ला शिर्क से मुक्त है,अल्लाह तआ़ला समस्त साझीदारों से तथा शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त है, शिर्क (मिश्रणवाद)दिल और आत्मा में बिगाड़ पैदा करता है,दुनिया एवं आखिरत को नष्ट कर देता है और मनुष्य को अति दुर्दशा व दुराचार का शिकार बना देता है।समाप्त

जिन चीज़ों में समस्त शरीअ़तों की सहमति है उन में शिर्क भी है

- **अल्लाह के बंदो!जिन मामलों में समस्त शरीअ़तें सहमत हैं उन में यह भी है:अल्लाह के प्रार्थना में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का निवारण,अल्लाह तआ़ला का कथन है:**

ولقد أوحي إليك **وإلى الذين من قبلك** لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين * بل **الله فاعبد** وكن من الشاكرين

अर्थात:तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

भाषा में शिर्क (मिश्रणवाद): شَرَّك الشيء المفرد بغيره **से निकला है(अर्थात एक को दूसरी चीज़ से मिलाना)। (यह उस समय कहा जात है) जब उस चीज़**

को दो अथवा दो से अधिक लोगों में समान कर दिया जाए,ऐसे में आप कहते हैं:[2] قد اشـــترك الرجلان وتشـــاركا **(अर्थात दो लोग एक साथ शरीक हुए)।इस आधार पर जब यह कहा जाए कि:** (فلان أشـــرك بالله) **(अमुक ने अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया) तो उसका अर्थ होगा:उस ने अल्लाह के साथ उन के कुछ विाशेषताओं एवं गुणों में साझा बनाया जिन में किसी को उस का साझा बनाना सही नहीं।चाहे उन गुणों का संबंध अल्लाह तआ़ला के नामों से हो अथवा गुणों से हो अथवा उस के कार्यों से,अथवा इस बात से हो कि अल्लाह तआ़ला ही समस्त प्रार्थनाओं का एकमात्र प्रात्र है,इस के अतिरिक्त कोई और नहीं,चाहे जिस को साझी बनाया जाए वह मनुष्य हो अथवा खनिज व धातु में से हो अथवा क़ब्र हो अथवा कोई और चीज़।**

सारे लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर थे,फिर क़ौमे नूह में सदाचार लोगों के सम्मान के कारण शिक्र आरंभ हो गया

अत: अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा

अल्लाह के बंदो!आदम अलैहिस्सलाम के युग से ले कर दस शताब्दियों तक लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे,फिर शिर्क (मिश्रणवाद) हुआ,अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा ताकि लोगों को एकेश्वरवाद की ओर बोलायें,अल्लाह का कथन है:

---

[2] **देखें:** «لسان العرب»، مادة: شَ-رَ-ک

كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين

अर्थात: (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे,(फिर विभेद हुआ) तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,और (अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैं:नूह और आदम के बीच दस शताब्दियों का अंतर था,उस बीच सारे लोग सत्य शरीअ़त पर थे,फिर उन के बीच मतभेद हो गया,तो अल्लाह ने पैगंबरों को शुभसूचना देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा।[3]

अल्लाह का कथन है: وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفوا

अर्थात:लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे,फिर उन्हों ने विभेद किया।

अर्थात: जिस दिन सत्य पर स्थिर थे उस से फिर गए और (मिश्रणवाद) करने लगे।

मोमिनों के समूह!शिक्र घटित होने के पश्चात एकेश्वरवार की दावत देने के लिए अल्लाह ने सर्वप्रथम जिस रसूल को भेजा वह नूह अलैहिस्सलाम हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى **نوح** والنبيين من بعده.

---

[3] **इब्ने जरीर ने यह कथन सूरह** البقرة **की आयत:213 की व्याख्या में रिवायत किया है।**

अर्थात: (हे बनी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वह्यी भेजा है,जैसे नूह और उस के पश्चात के नबियों के पास भेजा।

इब्ने कसीर रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:समस्त लोग आदम की मिल्लत (धर्म) पर थे,यहां तक कि वह वे मूर्ति पूजा करने लगे,उस के पश्चात अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को भेजा,वह सर्वप्रथम रसूल थे जिन को अल्लाह ने धरती पर रहने वालों की ओर भेजा।[4]

नूह अलैहिस्सलाम के युग में शिर्क (मिश्रणवाद) का कारण सदाचार लोगों का सम्मान था,जैसा कि सह़ी बोखारी में इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से इस आयत की व्याख्या में आया है: फरमाया:यह पांचों नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के सदाचार लोगों के नाम थे जब उन की मृत्यु हो गई तो शैतान ने उन के दिल में डाला कि अपने सभाओं में जहां वे बैठे थे उन के बुत स्थापित कर लें और उन बुतों के नाम अपने सदाचारी लोगों के नाम पर रख लें अत: उन लोगों ने ऐसा ही किया।उस समय उन बुतों की पूजा नहीं होती थी किन्तु जब वे लोग भी मर गए जिन्होंने मूर्ति स्थापित किए थे और लोगों में ज्ञान न रहा तो उन की पूजा होने लगी।[5]

शिर्क एकेश्वरवाद के तीन प्रकारों में होता है

---

[4] तफसीर इब्ने कसीर:البقرة 213,थोड़े हेरे फेर के साथ।

[5] सह़ी बोखारी: (4920)

अल्लाह के बंदो! शिर्क (मिश्रणवाद) की अवैधता इस्लाम धर्म के स्पष्ट मामलों में से है,यह इस्लाम भंजको में से है,जो व्यक्ति शिर्क (मिश्रणवाद) करता है वह इस्लाम से बाहर हो जाता है,यद्यपि शिर्क (मिश्रणवाद) करने वाला नमाज़ व रोज़ा का पालन ही क्यों न करता हो और अपने आप को मुसलमान ही क्यों न मानता हो,यह समस्त इस्लाम भंजकों में सर्वाधिक होने वाला भंजक है,अल्लाह की पुस्तक में शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता और मुशरिकों की यातना अनगिनत स्थानों बयान किया गया है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखें।

ऐ मोमिनों के समूह!तौ़हीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तै़हीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौ़हीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना) (तीनों प्रकार) में शिर्क (मिश्रणवाद) होता है।

तौ़हीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) में शिर्क (मिश्रणवाद) का उदाहरण यह है कि:यह आस्था रखा जाए कि अल्लाह के साथ कोई और भी मोदब्बिर(निर्वाहक),अथवा राजिक (जीविका दाता),अथवा रचनाकार,अथवा जीवन एवं मृत्यु प्रदान करने वाला है,जो व्यक्ति इस प्रकार का आस्था रखे तो वह मुशरिक है,यह अनिवार्य है कि अल्लाह तआ़ला को उपरोक्त समस्त कार्यों में ऐकता माना जाए,और बंदा के लिए जाएज़ नहीं कि उन में से किसी कार्य को अल्लाह के अतिरिक्त की ओर जोड़े।

अल्लाह के नामों में शिक्र का उदाहरण:मोसैलमा कज़्जाब का स्वयं को "رحمن الیمامۃ" [6]के नाम से पुकारना,यह वह व्यक्ति है जो नबी के युग में अस्तित्व में आया और पैगंबरी का दावा कर बैठा और स्वयं को "الرحمن" से पुकारने लगा,जो कि अल्लाह तआ़ला के उन नामों में से है जो केवल उन के साथ विशेष हैं।

अल्लाह के गुणों एवं विशेषणों में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का उदाहरण यह है कि: अल्लाह के अतिरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा किया जाए वह इस प्रकार से कि उस को अल्लाह का साझी माना जाए,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो यह आस्था रखे कि जादूगर और काहिन (पुरोहित) आदि गैब का ज्ञान रखते हैं,अथवा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को गैब का ज्ञानी माने,जो व्यक्ति अल्लाह के अितरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा करे वह शिर्क है।यह अनिवार्य है कि गैब के ज्ञान में अल्लाह को अकेला माना जाए जैसा कि अल्लाह ने अपनी हस्ती को उस से चित्रित किया है: قل لا يعلم من السماوات والأرض **الغيب إلا الله**.

अर्थात:आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

तैह़ीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना)-जो कि बंदों के कार्य है-इस में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का मतलब यह है कि किसी भी प्रार्थना में

---

[6] الیمامۃ **अरब उप महाद्वीप के बीच में एक स्थान का नाम है।**

अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त को साझी माना जाए,यह प्रार्थना जैसा भी हो,दुआ़,सजदा,ज़ब्ह़,नज़र (शपथ) व नियाज (याचना),इच्छा एवं विस्मय और आशा आदि। जिस ने इन प्रार्थनाओं का कोई भाग अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किया उस ने स्र्वश्रेष्ठ अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया।अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

(ولقد أوحي إليك وإلى الذين من قبلك لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين * بل الله فاعبد وكن من الشاكرين)

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

अल्लाह तआ़ला ने यह आदेश दिया है कि एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ़ की जाए,अल्लाह का कथन है:

(فادعوا الله مخلصين له الدين)

अर्थात: अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (दुआ़ ही प्रार्थना है)।[7]

अल्लाह ने क़ुरान में तीन सौ स्थानों पर एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ़ करने का आदेश दिया है,ज़ब्ह़ के विषय में अल्लाह ने आदेश दिया कि बंदा निकटता की नीयत से केवल अल्लाह के लिए जानवर ज़ब्ह़ करे,अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह ने फरमाया:

(فصل لربك وانحر)

अर्थात:तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।

तथा आप से अल्लाह ने फरमाया:

(قل إن صلاتي ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العالمين * لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين)

अर्थात:आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

इस आयत में نسک का आशय ज़ब्ह़ है।

---

[7] इस ह़दीस को अबूदाऊद (1479) और तिरमिज़ी (2969) आदि ने नोमान बिन बशीर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने इसे सह़ी कहा है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (उस व्यक्ति पर अल्लाह की अभिशाप है जो अल्लाह के अतिरिक्त के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करता है)।[8]

निष्कर्ष यह कि जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किसी भी प्रकार की प्रार्थना करे उस ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया,चाहे वह पूज्य क़ब्र हो,अथवा नबी हो,अथवा जादूगर हो,अथवा जिन्न हो अथवा कोई और,चाहे उस पूज्य के लिए प्रार्थना करने का कारण यह हो कि उस अल्लाह के निकट करने वाला माध्यम मानता हो,अथवा अनुशंसा मानता हो अथवा वसीला (माध्यम) अथवा कुछ और,यह सब शिर्क (मिश्रणवाद) है,और ये सब मुशरिकों के निराधार साक्ष्य हैं,अल्लाह तआ़ला ने मुशरिकों के विषय में फरमाया:

والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا **ليقربونا** إلى الله زلفى

अर्थात:तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिए करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह से।

तथा फरमाया: ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ويقولون هؤلاء **شفعاؤنا** عند الله

[8] सह़ी मुस्लिम (1978) वर्णन:अ़ली रज़ीअल्लाहु अंहु

अर्थात:और वह अल्लाह के सिवा उस की इबातद (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ,और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं।

तथा अधिक फरमाया:

أم اتخذوا من دون الله **شفعاء** قل أولو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون.

अर्थात:क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफारशी)?आप कह दें:क्या (यह सिफारिश करेंगे)यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समक्ष रखते हों?

ज्ञात हुआ कि वासता (माध्यम) और अनुशंसा को प्रमाण बना कर अल्लाह के अतिरिक्त की प्रार्थना करना क़ुरान की प्रमाणों के आलोक में व्यर्थ एवं निराधार है,जिन्हों ने ऐसा किया उन्हों ने अपने कार्य को अन्य के नाम से संबंधित किया,रचनाकार को मखलूक पर परिकल्पना किया, उन्होंने नहीं देखा कि दुनिया के राजाओं एवं सरदारों तक पहुंचने के लिए वासते (मध्यम),समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता होती है,इस लिए कहा कि अल्लाह का मामला भी ऐसा ही है,उस तक पहुंचने के लिए वासतों (माध्यमों), समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता है,जैसे पैगंबर,सदाचारी लोगों की कब्रें और देवदूत आदि,यह अल्लाह के साथ स्पष्ट शिर्क है।

ज्ञात हुआ कि शिक्र तौ़हीद (एकेश्वरवाद) के तीनों प्रकारों में हो सकता है, तौ़हीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तैह़ीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौ़हीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना)किन्तु अधिकतर तैह़ीद-ए-ईबादत/उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) में शिर्क होता है।

अल्लाह के बंदो!एखलास (निष्कपटता) एवं शिर्क के अर्थ को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के लिए लोगों की रचना के मूल उद्देश्य को समझना आसान हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता छे स्वरूपों से स्पष्ट होती है:

प्रथम स्वरूप:वह सबसे बड़ा पापी है जिस के द्वारा अल्लाह का अवज्ञा किया जाता है,क्योंकि इस से अल्लाह के अधिकारों का अवहेलना होता है,जैसे प्रार्थना,विनम्रता,विनम्रता एवं विनयशीलता,और अल्लाह तआ़ला के सम्मान में कमी करना उस के प्रति आशंका करने का प्रमाण है,जो कि बसबे बड़ा पाप है,अल्लाह का फरमान है:

ومن يشرك بالله فقد افترى إثما **عظيما**

अर्थात:और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

अधिक फरमाया: إن الشرك لظلم **عظيم**.

अर्थात:वास्तव में शिर्क (मिश्रणवाद) बड़ा घोर अत्याचार है।

इब्ने मस्ऊद से वर्णित है कि:मैं ने कहा:हे अल्लाह के रसूल!सबसे बड़ा पाप क्या है?आप ने फरमाया:तुम अल्लाह के साथ साझी बनाओ जब कि उसी ने तुम को पैदा किया।[9]

द्वतीय स्वरूप:शिर्क (मिश्रणवाद) समस्त अ़मलों को नष्ट कर देता है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है: ولو أشركوا **لحبط** عنهم ما كانوا يعملون

अर्थात:और यदि वह शिर्क (मिश्रणवाद) करते,तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।

और अल्लाह ने अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

---

[9] **सह़ी बोखारी (6811) और सह़ी मुस्लिम (86)**

ولقد أوحي إليك وإلى الذين من قبلك لئن أشركت **ليحبطن** عملك ولتكونن من الخاسرين * بل الله فاعبد وكن من الشاكرين.

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

तृतीय स्वरूप:जो व्यक्ति शिर्क की अवस्था में मरता है,अल्लाह उस को क्षमा नहीं करता,और शिर्क करने वाला स्वेद नरक में रहेगा,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

إن الله **لا يغفر أن يشرك به** ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا

अर्थात:नि:संदेह अल्लाह इसे क्षमा नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये,और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा।तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

إنه من يشرك بالله فقد **حرم الله عليه الجنة ومأواه النار** وما للظالمين من أنصار.

अर्थात:वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया,और उस का निवास स्थान नरक है,तथा अत्याचारियों का काई सहायक न होगा।

चौथा स्वरूप:अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान पाक में शिर्क (मिश्रणवाद) की कड़ी निन्दा बयान की है,उस से रोका है,मुशरिकों की निकृष्टता का

उल्लेख किया है,और आखिरत में उन का बुरा ठिकाना बताया है।क़ुरान में शिर्क और उस के यौगिकों का उल्लेख सौ (100) से अधिक बार आया है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी अनेक ह़दीसों में शिक्र से सचेत किया है।[10]

पांचवा स्वरूप:पैगंबर और उन के अनुयायी शिर्क (मिश्रणवाद) से डरे हुए थे और इस में पड़ने से डरते थे,इस का उदाहरण इबराहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ है: واجنبني وبني أن نعبد **الأصنام**

अर्थात:और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

छटा स्वरूप:इस्लामी विद्वानों की एक बात पर सर्वसम्मति है कि अल्लाह के प्रार्थना में शिक्र करना ऐसा अ़मल है जो मनुष्य को इस्लाम से बाहर कर देता है।इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:जो व्यक्ति फरिशतों और पैगंबरों का माध्यम बना कर उन्हें पुकारे,उन पर तवक्कुल (विश्वास) करे और उन से लाभ की प्राप्ति एवं हानि की दूरी की दुआ़ करे,उदाहरण स्वरूप उन से क्षमा,दिलों की बात,कठिनाई को दूर करने एवं आवश्यकता को पूरी करने की दुआ़ करे तो वह सर्वसम्मति से काफिर है।[11]

उपदेश की समाप्ति:

---

[10] **देखें:** "المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم" مادة: شَرَك

[11] **देखें:** "مجموع فتاوى ابن تيمية" **(1/124)**

अल्लाह के बंदो!तौ़हीद (एकेश्वरवाद) एवं इस के विपरीत (शिर्क) को समझने और शिर्क (मिश्रणवाद) और उसे में पड़ने से सचेत करने के लिए यह प्राक्कथन लाभदायक है,अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को जीवन भर तौ़हीद (एकेश्वरवाद) पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्यों कि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौ़हीद (एकेश्वरवाद) की स्थिति में मरा तो वह बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे हमारे रब!हमे दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : الناقض الثاني (من لم يُكَفِّر المشركين أو شك في كفرهم أو صحَّح دينهم)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:

द्वतीय भंजक: (जो मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे अथवा उन के धर्म को सही मानें)

الناقض الثاني (من لم يُكَفِّر المشركين أو شك في كفرهم أو صحَّح دينهم)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह पर ईमान लाना और झूठे पूज्यों का इंकार करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उन का आदर करो,उस का अनुसरन करो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन चीज़ों पर आकाशीय शरीअ़तों की सहमति है उन में यह भी है कि तौ़हीद (एकेश्वरवाद) दो स्तंभों पर आधारित है:प्रथम स्तंभ:ग़ैरुल्ला (अल्लाह के सिवा)की प्रार्थना से विरक्ति,जिसे अल्लाह ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) की प्रार्थना कहा है।द्वतीय स्तंभ:केवल एक अल्लाह की प्रार्थना का इकरार,और यही तौ़हीद (एकेश्वरवाद) है,अत: जो व्यक्ति मुशरिकों के धर्म से बराअत न करे उस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) से विरक्ति एवं उस का इंकार नहीं किया,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿فمن **يكفر بالطاغوت** ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها﴾

अर्थात:अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

इस आयत का एक अर्थ यह है कि जिस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) का इंकार नहीं किया उस ने मजबूत कड़े को नहीं थामा जो कि इस्लाम धर्म है।

इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय के धर्म से विरक्ति करते हुए फरमाया: ﴿إنني **براء مما تعبدون** * إلا الذي فطرني فإنه سيهدين * وجعلها كلمة في عقبه لعلهم يرجعون﴾

अर्थात:निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है,वही मुझे राह दिखायेगा।तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को।अपनी संतान में ताकि वह (शिर्क से) बचते रहें।

तारिक़ बिन अशयम अलई रज़ीअल्लाहु अंहु नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:जिस ने "لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ" कहा और अल्लाह के सिवा जिन की पूजा की जाती है,उन (सब) का इंकार किया तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित हो गया और उस का हिसाब अल्लाह पर है।[12]

---

[12] सह़ी मुस्लिम (23)

ह़दीस का अर्थ यह है कि:जिस ने उन पूज्यों का इंकार नहीं किया जिन की अल्लाह के सिवा पूजा की जाती है,तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित नहीं,और यह केवल काफिर के हित में होता है।

काफिर को काफिर न कहना इस्लाम भंजकों में से है-इसके कारणों की स्पष्टी

अल्लाह के बंदो!क़ुरान व ह़दीस के उपरोक्त स्पष्टिकरण के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे,अथवा उन के धर्म को सह़ी माने,तो उस ने कुफ्र किया और इस्लाम भंजकों में से एक को किया।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति असत्य धर्मों के अनुयायियों को काफिर न माने तो वह भी वास्तव में काफिर ही है,मुसलमान नहीं,क्योंकि उस ने उस व्यक्ति को काफिर नहीं माना जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है,और उस ने न तो क़ुरान की सूचनी की पुष्टि की और न पैगंबर के आदेश का पालन किया,और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल की सूचना की पुष्टि न करे वह काफिर है,अल्लाह का शरण।

तथा जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न कहे,उस के लिए ईमान एवं कुफ्र एक समान होते हैं,इन दोनों में अंतर बाकी नहीं रहता,इस लिए वह काफिर है।[13]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिर को काफिर नहीं मानता वास्तव में वह इस्लाम एवं कुफ्र में अंतर नहीं जानता,जबकि धर्म का यह ऐसा आदेश है जो सब को मालूम है,क़ुरान पाक में अनेक स्थानों पर कुफ्र का इंकार किया गया है और दुनिया एवं आखिरत में काफिरों को मिलने वाली यातनाओं का उल्लेख किया गया है,और जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह मुसलमान कहलाने का पात्र नहीं,यहां तक कि इस्लाम एवं कुफ्र का अंतर जान जाए और अपने दिल एवं ज़बान से संपूर्ण रूप से कुफ्र से मुक्ति का प्रदर्शन करे।

- तथा यह कि जो मनुष्य उस व्यक्ति को काफिर न माने जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है तो उस ने अल्लाह के ह़राम किया हुआ शिक्र को ह़लाल कर दिया,वह इस प्रकार से कि जो व्यक्ति मुशरिक है,उसे काफिर नहीं माना,और यह

---

[13] यह शैख सालिह़ अलफौज़ान का कथन है जो उन्होंने अपनी पुस्तक: "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या 79 में उल्लेख किया है।

अल्लाह के आदेश का उल्लंघन है,बल्कि इस में अल्लाह से युद्ध करना है,अल्लाह का फरमान है:

﴿قل تعالوا أتل ماحرم ربكم عليكم **ألا تشركوا به شيئا**﴾ الآية.

अर्थात:आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या ह़राम (अवैध) किया है?वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ।

इब्ने सादी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: (हर वह व्यक्ति जिस कि शरीअ़त ने जिसको काफिर कहा है,उस को काफिर कहना अनिवार्य है,और जो व्यक्ति उसे काफिर न माने जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है,तो वह अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाने वाला है,यह उस समय जब उस के नजदीक शरई़ प्रमाण से उस का काफिर होना सिद्ध हो जाए)[14]।

शैख अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन बाज़ रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह भी उसी के जैसा है,शर्त यह है कि उसके समक्ष प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं,फिर भी वह उसे काफिर न मानने पर अटल रहे तो,उदाहरण स्वरूप जो यहूदी अथवा ईसाई अथवा साम्यवादियों को अथवा उन जैसे अन्य ऐसे काफिरों को काफिर न माने जिन का कुफ्र

---

[14] الفتاوى السعدية: 98

थेड़े ज्ञान एवं बसीरत (समझ बूझ) वाले के लिए भी संदेहजनक नहीं है)[15]

शैख सालिह़ बिन फौज़ान अलफौज़ान रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने वह उन के जैसा ही काफिर और मुरतद (स्वधर्मत्यागी) है,क्योंकि उसके लिए इस्लाम एवं कुफ्र एक समान हैं,वह इन दोनों में अंतर नहीं करता,इस लिए वह काफिर है)।[16]

ताग़ूत (असत्य पूज्यों) के इंकार करने का महत्व

अल्लाह के बंदो!जैसा कि ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार करने का बड़ा महत्व है,इस लिए अल्लाह पर ईमान लाने से पूर्व ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार का उल्लेख है,ताकि बंद के मज़बूत कड़े के थमने का कार्य पूरा हो सके,यह अल्लाह के इस फरमान में है:

﴿فمن **يكفر بالطاغوت** ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها﴾

अर्थात:अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

---

[15] "مجموع فتاوى ومقالات متنوعة" (٧/٤١٨), **दारुल क़ासिम-रियाज**

[16] "شرح نواقض الإسلام" **पृष्ठ संख्या:79**

यह शुद्धिकरण को शिष्टाचार पर प्राथमिकता देने की श्रेणी से है,अर्थात पाप से पवित्र करना और अच्छाई से सुरूचिपूर्ण करना।

तग़ूत (अल्लाह के सिवा) का इंकार पांच चीज़ों से पूरा होता है

अल्लाह के बंदो!असत्य धर्मों का इंकार पांच चीज़ों के द्वारा किया जाता है,उन के असत्य होने का आस्था रखना,उन की पूजा को छोड़ देना,उन से घृणा रखना,उन के मानने वालों को काफिर मानन,और उन से शत्रुता रखना,ये समस्त शर्तें अल्लाह तआ़ला के इस फरमान से मिलती हैं:

﴿قد كان لكم أسوة حسنة في إبراهيم والذين آمنوا معه إذ قالوا لقومهم إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا حتى تؤمنوا بالله وحده﴾.

अर्थात:तुम्हारे लिये इबराहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है,जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा:निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त,हम ने तुम से कुफ्र किया,खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर।

यह आयत तीन चीज़ों पर साक्ष्य है:काफिरों से बराअत का प्रदर्शन करना,उनके कार्य-शिर्क करने-से बराअत का प्रदर्शन करना,और उन से घृणा एवं शत्रुता का प्रदर्शन करना।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा के असत्य होने का आस्था रखना तो यह इस आयत से स्पष्ट है,क्यों कि यदि उस के असत्य होने का आस्था न हो तो यह तीनों चीज़ें पूरी नहीं हो सकती।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा छोड़ने और उन से संबंध समाप्त करने की तो यह इस आयत से सिद्ध है जिस में इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय से कहा:

﴿**وأعتزلكم** وما تدعون من دون الله وأدعوا ربي عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا﴾.

अर्थात:तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा,और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से,मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन समस्त अंगों से होता है

उपरोक्त आयतों में एक बारीक बिंदु छुपा है,वह यह कि कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन दिल,जबान और शरीर के अंगों से होता है,दिल से विरक्ति का प्रदर्शन उन से घृणा एवं उनके प्रति कुफ्र का आस्था रख कर होता है,जैसा कि इस आयत में है: ﴿كفرنا بكم﴾.

ज़बान से बराअत का प्रदर्शन इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस विवरण में है जो उन्होंने अपने समुदाय के समक्ष की: ﴿كفرنا بكم﴾.

और शरीर के अंगों से विरक्ति का प्रदर्शन उन के इस कथन में है कि:

﴿**وأعتزلكم** وما تدعون من دون الله﴾.

अर्थात: तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा।

विरक्ति का प्रदर्शन प्रत्येक प्रकार के कुफ़्र से किया जाएगा,न कि केवल प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति किया जाएगा

अल्लाह के बंदो! विरक्ति का प्रदर्शन केवल अल्लाह की प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति करने में सीमित नहीं है,बल्कि शिर्क व कुफ़्र के समस्त प्रकारों को शामिल है,जैसे अल्लाह को दोषों से चित्रित करना,अथवा धर्म का परिहास उड़ाना,अथवा सह़ाबा को आलोचना का निशाना बनाना,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों) पर कीचड़ उछालना,अथवा यह सोचना कि जिबरील ने रिसालत में विश्वासघात की,अथवा ईसाइयत,यहुदियत एवं बौद्ध धर्म को सह़ी मानना,अथवा इस प्रकार के कुफ़्र की चीज़ों को करना जिन के कर्ता के काफिर होने पर सर्वसम्मति है

अल्लाह के बंदो!इस प्राक्कथन से तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और उसके विपरीत के ज्ञान का महत्व स्पष्ट हो गई,तौह़ीद के अध्याय में आपसी प्रेम एवं संबंध का

अर्थ स्पष्ट हो गया,उस के विपरीत से बराअत का अर्थ स्पष्ट हो यगा,इस के ज्ञान से दिल सत्य मार्ग पर स्थिर रहता है,क्योंकि विपरीत के द्वारा ही विपरीत का महत्व स्पष्ट होता है,जैसा कि कवि ने कहा:

وبضِدها تتبين الأشياء فالضِّد يظهر حسنه الضد

अर्थात:विपरीत की सुंदरता उस के विपरीत से ही स्पष्ट होती है और चीज़ें अपने विपरीत से ही स्पष्ट होती हैं।

अत: जो व्यक्ति शिर्क से अनजान हो वह तौ़हीद (एकेश्वरवाद) से भी अनजान रहता है,और जिस ने शिर्क से विरक्ति का प्रदर्शन नहीं किया उस ने तौ़हीद को पूरा नहीं किया।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और जान लो जो व्यक्ति मुशरिकों के काफिर होने में संदेह करता है,वह भी उन के ही जैसा है,अत: उदाहरण के लिए जो व्यक्ति यह कहे: (मुझे नहीं पता,यहूदी काफिर है अथवा नहीं),यह किया है: (मुझे नहीं पता,ईसाई काफिर हैं अथवा नहीं),अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के सिवा को पुकारने वाला मुसलमान है अथवा नहीं) अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि फिरऔन काफिर है अथवा नहीं) तो ऐसा कहने वाला व्यक्ति भी काफिर है,इस का कारण यह है कि वह इस बात में संदेह में है कि कुफ्र स्वयं सत्य है अथवा असत्स है।अत: वह निश्चित रूप से कुफ्र असत्य नहीं कहता,और न ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) का इंकार करता है,जबकि अल्लाह ने इस विषय में क़ुरान में निर्णायक रूप से बयान कर दिया है,और यह स्पष्ट कर दिया है कि कुफ्र असत्य है,अब जो व्यक्ति इस स्पष्टिकरण के बावजूद संदेह करे तो इसकी वासतविकता यह है कि क़ुरान में अवतरित अल्लाह के आदेश पर उस का ईमान नहीं है।

तथा यह कि शिर्क करने वाला इस्लाम धर्म से वास्तविक रूप से अपरिचित है,यदि वह इस्लाम धर्म से अवगत होता तो उस के समक्ष इस्लाम का विपरीत अर्थात कुफ्र स्पष्ट होता,और जो व्यक्ति इस्लाम

धर्म से अवगत न हो उस पर मुसलमान होने का हुकुम कैसे लगाया जा सकता है?!

शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब[17] रह़िमहुमुल्लाह अपनी पुस्तक: "أوثق عرى الإيمان" में फरमाते हैं:

यदि वह उन के कुफ्र के प्रति संदेह करे अथवा उन के कुफ्र से अनजान हो,तो उस के समक्ष कुरान एवं ह़दीस के वे प्रमाण प्रस्तुत किये जाएंगे जिन से उन का कुफ्र स्पष्ट होता है,उस की पश्चात भी यदि संदेह करे अथवा संदेह करे तो वह काफिर है क्योंकि विद्धानों की सर्वसम्मति है कि जो व्यक्ति काफिर के कुफ्र में संदेह करे तो वह भी काफिर है।[18]

जो व्यक्ति काफिरों के धर्म एवं उन के दीन को सह़ी माने,उस के प्रति आदेश

---

[17] शैख सुलैमान नजद के महान विद्धानों में गिने जाते हैं,उन का जन्म सन 1200 हिजरी में हुआ,उन्होंने अनेक शैखों से ज्ञान प्राप्त किया,उन को कुतुबे सित्तह (बोखारी,मुस्लिम,अबूदाऊद,तिरमिज़ी,निसई एवं इब्ने माजा) में इजाज़ह (वर्णन करने की अनुमति) प्राप्त थी,उन्होंने पठन-पाठन एवं निर्णय का कार्य किया,उन का दिहांत जवानी में 1234 हिजरी को अल्लाह की अनुमति से शहादत के रूप में हुआ,उनके अनेक लेख हैं,सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "تيسير العزيز الحميد" है,तीन शताब्दियों से विद्धान एवं छात्रगण इससे लाभान्वित हो रहे हैं,तौ़हीदे ईबादत के अध्याय में वह सनद माने जाते हैं,उन के पश्चात आने वाले समस्त लोग और छात्र उन से लाभान्वित होते आए हैं,अल्लाह उन पर अपनी विस्तृत कृपा करे।

[18] مجموع رسائل الشيخ पृष्ठ संख्या 135,संपादक:डाक्टर वलीद बिन अ़ब्दुर रह़मान आल फरयान ह़फिज़हुल्लाह,प्रकाशक:دار عالم الفوائد

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिरों के मज़हब एवं धर्म को सही माने,तो वह उस व्यक्ति से भी अधिक गुमराह है जो उन के धर्म के असत्य होन पर संदेह करता है,उस का कुफ्र संदेह करने वाले के कुफ्र से अधिक बड़ा है,क्योंकि उसकी वास्तविकता यह है कि वह इस्लाम धर्म को गलत कहता है जिस ने काफिरों के धर्म को असत्य कहा है,वह कुफ्र की रक्षा करता है,उस की दावत देता और उस की सहायता करता है,बल्कि कुफ्र के प्रचार प्रसार के लिए मैदान तैयार करता है,अल्लाह का शरण,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो इस्लाम धर्म के विरुद्ध आस्थाओं में से किसी आस्था को सही समझे,जैसे यहूदियत, अथवा, ईसाइयत,अथवा समाजवाद,अथवा धर्मनिरपेक्षता जैसे काफिरों के संप्रदायों को सही समझे,अथवा भ्रम में तीनों धर्मों के बीच एकता की दावत दे,अर्थात यहूदियत,ईसाइयत और इस्लाम के बीच,और उन के धर्मों को इबराहीमी धर्म का नाम दे,और असत्य कलाम के द्वारा लोगों को संदेह में डाले और कहे कि यहूदी एवं ईसाई मूसा एवं ईसा के अनुयायी है,यह सत्य को असत्य के साथ मिलाना है,क्योंकि अल्लाह ने इस्लाम धर्म के द्वारा समस्त धर्मों को निरस्त कर दिया,और यदि मूसा एवं ईसा भी जीवित होते तो वे भी इस्लाम धर्म का अनुगमन करते,यह उस समय की बात है जब वे सही धर्म पर स्थिर होते,किन्तु अब स्थिति यह है कि उन के लाए हुए धर्म में विरूपण हो चुकी है और वह अपने सत्य रूप से

बिल्कुल बदल चुके हैं,अत: तौरात के नष्ट होने के पश्चात मूसा के धर्म में विरूपण आगई,और (यहुदियों ने) ओ़ज़ैर की पूजा आरंभ कर दी,और कहने लगे:वह अल्लाह के बेटा हैं?मसीह़ को जब आकाश की ओर उठा लिया गया तो उन के धर्म में भी विरूपण आगई और उन के अनुयायी सलीब की पूजा करने लगे,और कहने लगे कि वह अल्लाह के बेटा हैं,और अल्लाह तीन पूज्यों में से एक है,क्या इस के पश्चात भी यह कहना सह़ी होगा कि यहूदियत और ईसाइयत सह़ी धर्म हैं,जिन के द्वारा अल्लाह की पूजा करना लोगों के लिए जाएज़ है? !कदापि नहीं,अल्लाह का फरमान है:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ﴾

अर्थात: हे अहले किताब!तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं,जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं,जिन्हें तुम छुपा रहे थे,और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं,अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकार तथा खुली पुस्तक (क़ुरान) आ गई है।

तथा फरमाया:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

अर्थात:हे अहले किताब!तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात हमारे रसूल आ गये हैं,वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं,ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा

सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया,तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है।तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

अल्लाह अधिक फरमाता है: ﴿ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين﴾. अर्थात:और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा। खुलासा यह कि जो व्यक्ति काफिरों के धर्म को सह़ी माने जैसे यहूदियत अथवा ईसाइयत को,तो वह काफिर है,अल्लाह का शरण।[19]

राफ़िज़ियों से निकट होने की दावत मुशरिकों के धर्म को अच्छा समझने में शामिल है

अल्लाह का शरण,इसी का उदाहरण यह भी है कि राफ़िज़ियों से निकट होने की दावत दी जाए,वे राफज़ी जिन के धर्म का आाधार ही क़ब्रपूजा,आले बैत की पूजा,नबी की सुन्नत का इंकार,सह़ाबा को काफिर मानना,दोनों अमीनों पर आलोचना,अर्थात देवदूतों के अमीन जिबरील और उम्मत के अमीन मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम,क़ुरान पर आलोचना और अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान पर तान व तशनी करने पर है,अत: तो व्यक्ति उन से निकटता बढ़ाने की दावत दे,और उन के धर्म को सुंदर बना कर प्रस्तुत करे तो वह वास्तव में उन से मुक्त नही है,इस लिए वह भी उन के जैसा ही काफिर है,क्योंकि उस ने कुफ्र और निफाक़ (द्विधावाद) को सह़ी

---

[19] देखें:"شرح نواقض الإسلام" "الإبطال لنظرية الخلط بين دين الإسلام وغيره من الأديان" लेख:शैख अबू बकर ज़ैद,रह़िमहुल्लाह, पृष्ठ संख्या81,लेख:शैख सालिह़ अलफौज़ान ह़फिज़हुल्लाह

समझा,यद्यपि उसे स्वीकार नहीं किया,अल्लाह तआ़ला हमें इससे सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति

अल्लाह के बंदो!तौ़हीद (एकेश्वरवाद) और इस के विपरीत को समझने और शिर्क और इस में पड़ने से सचेत करने के लिए और यह बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि मुसलमान पर अनिवार्य है कि मुशरिकों का काफिर न मानने अथवा उन के कुफ्र में संदेह करने अथवा उनके धर्म को सही़ मानने से सचेत रहें,क्योंकि ये तीनों इस्लाम भंजकों में से हैं,मुसलमान पर अनिवार्य है कि जिस व्यक्ति को अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर बताया है उसके कुफ्र पर विश्वास रखे और उस के दिल में इस विषय में किसी प्रकार का संदेह न हो।

अल्लाह समस्त लोगों को जीवन भर तौ़हीद पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्योंकि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौ़हीद की स्थिति में उस की मृत्यु हुई तो वह बिना हिसाब व किताब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما﴾

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ करते हैं।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी

موضوع الخطبة : **الناقض الثالث**: (من اعتقد أن غير هدي النبي (صلى الله عليه وسلم) خير من هديه فقد كفر، وكذلك من اعتقد أن حكم غير الله خير من حكم الله، كالذين يفضلون حكم الطواغيت والقوانين الوضعية على حكم الله)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

तृतीय भंजक: (जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अच्छा है,तो उस ने कुफ्र किया,इसी प्रकार से वह व्यक्ति (भी काफिर है जो) यह आस्था रखे कि गैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) का आदेश (निर्णय) अल्लाह के आदेश (निर्णय) से अच्छा है,जैसे वे लोग जो तागू़तों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के निर्णय को और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के निर्णय पर प्राथमिकता देते हैं)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे पूर्ण मार्ग है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उस का आदर करो,उस की आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचते रहो,और जान लो कि मोह़म्मद रसूलुल्लाह की गवाही देने से इस बात पर ईमान लाना अनिवार्य हो जाता है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे सर्वश्रेष्ठ और सबसे पूर्ण है,इस का आशय वह वह मार्ग है जिसे नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आस्था,प्रार्थनाओं,मामलों,नैतिकता,निर्णयों एवं राजनीतिक आदि में अपनाया,जिस का उल्लेख क़ुरान एवं ह़दीस में आया है।

अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग ही सबसे सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,क्योंकि आप ने यह मार्ग अल्लाह तआ़ला से प्राप्त किया है,और यह मार्ग जीवन के समस्त शोबो को शामिल

है,प्रार्थनाएं,नैतिकता,राजनीतियां,निर्णयों,सामाजिक,शैक्षिक व प्रशिक्षण आदि समस्त पहलू इस में आते हैं।

इस का प्रमाण कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अच्छा मार्ग है,अल्लाह का यह कथन है:

(لقد كان لكم في رسول الله أسوة)

अर्थात:तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थे: (सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद का मार्ग है)।

आस्था के अध्याय में सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है

अल्लाह के बंदो!नबी की जीविका का अध्ययन करने वाले को पता चल जाता है कि आप का मार्ग ही सबसे अफजल मार्ग है,अत: आस्था के अध्याय में हम देखते हैं कि वह इस्लामी आस्था जिसे आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रस्तुत किया और जिस की शिक्षा दी वह उन समस्त अध्यायों एवं मसले को

शामिल है जिन की अल्लाह पर,उस के दुवदूतों,पुस्तकों,रसूलों,आखिरत के दिन और तकदीर के भला-बुरा पर ईमान लाने के बाब में मनुष्य को आवश्यकता पड़ती है,यह आस्था पूर्व के पैगंबरों के आस्था में स्वस्थ बुद्धि के अनुसार नवीनता लाता है और मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति से रोकता है।

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,इस में न कोई मुद्रास्फीति है न कोई अपस्फीति , न संसार त्याग है और न आलसा,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह इस्लाम धर्म बहुत आसान है।और जो व्यक्ति धर्म में कठोरता करेगा तो धर्म उस पर गालिब आ जाएगा,इस लिए संयम अपनाओ और (एतेदाल के साथ) निकट रहो और प्रसन्न हो जाओ।[20]

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक सह़ाबी से फरमाया जो इ़बादत (वंदना) में अपने नफ्स को थका देना चाहते थे:

---

[20] इस ह़दीस को बोखारी (39) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

(तुम्हारे नफ्स का भी तुम पर अधिकार है)।[21] और जब किसी सह़ाबी ने कहा कि वह मीट नहीं खाएंगे,किसी ने कहा कि:मैं महिलाओं से दूर रहुंगा और कभी विवाह नहीं करुंगा,तीसरे ने कहा:मैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा,चौथे ने कहा:मैं रात भर क़्याम करुंगा,तो आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से कहा:किन्तु मैं रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं,इस के अतिरिक्त महिलाओं से निकाह भी करता हूं,जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वह मुझ से नहीं है।[22]

नैतिकता के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

नैतिकता के अध्याय में हम देखते हैं कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का नैतिक सबसे पूर्ण है,इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं,क्यों कि जिस ने आप को प्रशिक्षण व शिक्षा दी वह अल्लाह

---

[21] इस ह़दीस को अह़मद (6/268) आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है और "المسند" (26408) के शेधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,इस ह़दीस का मूल बोखारी व मुस्लिम में अबू ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु और अन्य सह़ाबा से वर्णित है।

[22] इस ह़दीस को बोखारी (5063) और मुस्लिम (1401) ने तकरीबन उपरोक्त शब्दों में अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

तआ़ला है,और अल्लाह ने ही आप का सुंदर व्यवहार की गवाही भी दी,अल्लाह ने आप से फरमाया: (وإنك لعلى خلق عظيم)

अर्थात:तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।

परिवार वालो,सह़ाबा और पड़ोसियों के प्रति नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का जो नैतिक एवं व्यवहार था,उस पर विचार करने से मालूम होता है कि आप हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते थे,क्षमा से काम लेते,यहां तक कि आप ने उस यहूदी महिला को भी क्षमा कर दिया जिस ने आप के खाने में जहर मिला दिया और उस का प्रभाव आप ने अपने मृत्यु के समय महसूस किया,आप लोगों के प्रति कृपालु एवं दयालु थे,यहां तक कि युद्ध में शत्रुओं के साथ भी दया एवं कृपा का व्यवहार करते,अत: ऐसे व्यक्ति की हत्या करने से आप ने मना फरमाते जो युद्ध में भाग न लिया हो,जैसे बूढ़े,महिलाएं एवं बच्चे,धन लूटने से रोकते,विश्वासघात से रोकते,अर्थात ग़नीमत के धन के बंटवारे से पहले कुछ लेने से रोकते,और अल्लाह के आदेश के अनुसार आप गनीमत के धन को बांटते थे,मृत्यु का मुस्ला करने से रोकते, अर्थात मृत्यु की शकल बिगाड़ने और उस से प्रतिशोध लेने से

मना फरमाते,वचन-भंग और गद्दारी से रोकते,और बिना किसी प्रतिकर के कैदियों को रिहा कर देते,उन में से कुछ को प्रतिशोध के लिए हत्या कर देते,कुछ को फिदया (प्रतिदान) ले के रिहा कर देते और और कुछ को मुसलमान क़ैदियों की रिहाई के बदले में रिहा कर देते,यह सब आप नीति के अनुरूप किया करते थे।

अल्लाह के बंदो!आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुंदर व्यवहार का उल्लेख तौरैत एवं इंजील में भी आया है,अत: अ़ता बिन यसार का बयान है:मैं ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ीअल्लाहु अंहुमा से मिला और कहा कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो विशेषता एवं गुण तौरैत में है,मुझे वह बता दी जिए।उन्होंने फरमाया:

"अल्लाह की क़सम!आप के कुछ गुण तौरैत में वही हैं जो क़ुरान में बयान हुए हैं। (ऐ नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम!हम ने आप को गवाही देने वाला,शुभ सूचना देने वाला,डराने वाला बना कर भेजा)और اُمِّيِّين [23]की निगहबानी करने वाला बना कर भेजा है।तू मेरा बंदा और मेरा रसूल है।मैं ने तेरा नाम متوكل रखा है,न तू

---

[२३] अर्थात अ़रबों की संरक्षण करने वाला,अ़रबों को اُمِّي इस लिए कहते हैं कि उन के युग में लिखने पढ़ने का चलन बहुत कम था।देखें: इब्ने असीर की النهاية

दुश्चरित्र है और न कठोर हृदय वाला,न तू बाज़ारों में शोर करने वाला है और न बुराई का बदला बुराई से देता है बल्कि क्षमा एवं दया करता है,अल्लाह तआ़ला उसे उस समय तक बिल्कुल मृत्यु नहीं देगा जब तक कि उस के द्वारा एक टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दे वह इस प्रकार से कि वह कहने लगें और उस के द्वारा नेत्रहीन देखने वाले हो जाएं और बेहरे कान खोल दिए जाएं और अनभिज्ञ अवगत किए जाएं।[24]

मामलों के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

व्यापारिक मामलों में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग प्रत्येक प्रकार के मामलों को शामिल है,जैसे बेचना खरीदना,किराया,वकालत एवं उधार लेने देन आदि।इसी प्रकार से आप की जीविका खरीदने बेचने के उन समस्त प्रकारों की स्पष्टता में भी पूर्ण है जो अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक हैं,जैसे सूद,धोखा एवं रिश्वत आदि,इब्नुल क़य्यिम रहि़महुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زادالمعاد" में तकरीबन अस्सी (80) पृष्ठों में अनेक अध्याय

[24] इस ह़दीस को बोखारी (2125) ने रिवायत किया है।

स्थापित किए हैं जिन में खरीदना व बेचना से संबंधित तरीके बयान किए गए हैं।

राजनीति से अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

राजनीति के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे पूर्ण मार्ग है,विशेष एवं अमानतदार लोगों से आप दीनी मामलों में सलाह लिया करते थे,कभी कभी अपनी पत्नियों से भी परामर्श मांगते,जिस प्रकार से आप ने बदर,खंदक़ और ह़ोदैबिया आदि के अवसर से किया,इस से आप को सही राय जानने में सहायता मिलती और विजय प्राप्त होता,आप काफिरों के साथ अमन व शांति का अनुबंध करते,उन के राजदूतों के साथ सुंदर व्यवहार करते,जो काफिर आप के पास आता आप उसे शरण प्रदान करते यहां तक कि वह अपने शरण की ओर लोट जाता,उन के साथ जो ठोस अनुबंध करते उसे पूरा करते,आप वचन-भंग और विश्वासघात से संपूर्ण मुक्ति में प्रसिद्ध थे,यद्यपि काफिर विश्वासघात क्यों न करदें (फिर भी आप ऐसा नहीं करते),युद्ध में मैदानों में अत्याचार करने वालों को क्षमा कर देते,जब मक्का विजय हुआ और आप को वहां के निवासियों पर प्रभुत्व प्राप्त

हुआ और शक्ति एवं सरदारी आप के हाथ में आगई,तो आप ने समस्त लोगों को क्षमा कर दिया,जब कि यही वे लोग थे जिन्होंने आप से युद्ध किया और आप को मक्का से निकाल बाहर किया,आप के साथ और आप के सह़ाबा के साथ क्या क्या नहीं किया,किन्तु आप ने उन सब को क्षमा कर दिया,जबकि आप उन से प्रतिशोध लेना चाहते तो आसानी से ले सकते थे,आप का न कोई निंदा होता और न कोई पकड़।

निर्णय एवं न्याय के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

निर्णय और न्याय के बाब में बनी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अधिक निष्पक्ष एवं पूर्ण मार्ग है,इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زاد المعاد في هدي خير العباد" में तकरीबन पांच सौ (500) पृष्ठों में अध्याय स्थापित किये हैं जिन में न्याय से संबंधित आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग बयान किया है।

चिकित्सा एवं उपचार के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है

चिकित्सा व उपचार के बाब में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग अकमल है,इब्नुलक़य्यिम रहिमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक"زادالمعاد" में तकरीबन चार सौ (400) पृष्ठ के अंदर दिली एवं शारीरिक इलाज का पैगंबरी तरीका बयान किया है।

अल्लाह के बंदो!अनेक बुद्धिमान काफिरों ने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके के बारे में यह गवाही दी है कि वह सर्वोत्तम तरीका है,उन में से अनेक लोगों ने इस्लाम स्वीकार भी किया है,क्योंकि उन को विश्वास हो गया कि ऐसा व्यापक मार्ग कोई मनुष्य अपनी ओर से प्रस्तुत नहीं कर सकता,पर वही जो नबी हो जिसे अपने रब की सहायता प्राप्त हो।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए एक लाभदायक प्राकथ्थन है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर्श एवं मार्ग ही सबसे कामिल एवं उत्तम मार्ग है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के समक्ष नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम एवं आप के मार्ग रक्षा का दरवाजा खुल जाएगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और

नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एवं तरीका प्रत्येक स्थान एवं युग के लिए उपयुक्त एवं उचित है

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग हर युग एवं स्थान के लिए उपयुक्त एवं उचित है,वह एक ठोस प्रणाली है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,क्योंकि वह अल्लाह तआ़ला की ओर से अवतरित वह्य (प्रकाशना) पर आधारित है,वह अल्लाह जो अपने ज्ञान व नीति एवं कृपा में पूर्ण है,जो लोगों के लिए भलाई की इच्छाओं में भी पूर्ण है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वह्य को लोगों तक पहुंचा दिया,यही अल्लाह का सीधा

मार्ग और उस का संतुलित धर्म है जिसे अल्लाह ने अपने बंदों के लिए पसंद फरमाया और उस के सिवा कोई धर्म अल्लाह को पसंद नहीं।

जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग अफजल है तो वह काफिर है,अथवा यह आस्था रखे कि अल्लाह के सिवा किसी और का निर्णय और आदेश अल्लाह के निर्णय एवं आदेश से अच्छा है तो वह भी काफिर है,जैसे वे लोग जो तागूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के आदेश और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के आदेश पर पराथमिकता देते हैं

उपरोक्त विवरणों के अनुसार जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग एवं तरीका नबी के मार्ग एवं तरीके से सर्वश्रेष्ठ है तो वह काफिर है,क्योंकि ऐसा व्यक्ति वास्तव में अल्लाह की नीति एवं शरीअ़त की निंदा करता है,उदाहरण स्वरूप जो धर्मनिरपेक्षता,उदारतावाद और लोकतंत्र जैसे मनुष्य के बनाए हुए जीवन प्रणाली को इस्लामी शरीअ़त पर प्राथमिकता देता है,अथवा यह आस्था रखे कि मनुष्य के बनाए हुए नियम एवं कानून इस्लामी शरीअ़त से

श्रेष्ठ हैं,अथवा यह कि इस्लामी प्रणाली बीसवी शदाब्दी में लागू होने के योग्य नहीं,अथवा यह कि इस्लामल प्रणाली मुसलमानों की पिछड़ेपन का कारण है,अथवा इस प्रणाली को रब और बंदा के आपसी संबंध में सीमित करके जीवन के अन्य भागों से उसे बाहर करदे,अथवा यह राय रखे कि चोर का हाथ काटने अथवा विवाहित बलात्कारी को संगसार (पत्थर मार कर हत्या करना) करने जैसे अल्लाह के आदेश आधुनिक युग के लिए उचित एवं उपयुक्त नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि मामलों अथवा हुदूद (इस्लामी सीमएं) आदि में इस्लामी शरीअ़त के अतिरिक्त अन्य प्रणाली के द्वारा निर्णय करना जाएज़ है,तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,क्योंकि वह इस राय के द्वारा मखलूक के निर्णय को खालिक़ (रचनाकार) पर प्राथमिकता देता है और जाहिलियत (अंधकार युग) के निर्णय से प्रसन्न होता है और इस बात से प्रसन्न होता है कि ताग़ूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) और उस का निर्णय अल्लाह और उस के रसूल के निर्णय से श्रेष्ठ है,और अल्लाह ने जिस प्रकार से उस का खंडन और तकफीर (काफिर मानना) करने का आदेश दिया है,उस पर अ़मल नहीं करता:

(فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها)

अर्थात:अत: अब जो तागूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

तथा उस ने उस चीज़ को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) कर दिया है जिसे अल्लाह ने पूर्ण रूप से ह़राम (अवैध) कर दिया है और जो व्यक्ति अल्लाह के ह़राम चीज़ों को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) बताए वह अल्लाह से शत्रुता रखने वाला है और सवर्सम्मति से वह काफिर है।[25]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति रसूल का आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह मोड़े वह मोनाफिक (द्विधावादि)है मोमिन नहीं।अल्लाह का फरमान है:

وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم رأيت المنافقين **يصدون** عنك صدودا

अर्थात:और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का) तो

---

[25] **देखें: शैख इब्ने बाज़ रह़िमहुल्लाह की** (مجموع فتاوى مقالات متنوعة) **(1/132)**

आप मोनाफिको (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मूँह फेर रहे हैं।

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो व्यक्ति रसूल की आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह चुराए तो वह मोनाफिक (द्विधावादि) है,मोमिन नहीं।और वह मोमिन है जो कहे: (हम ने सुना और आज्ञा माना),केवल रसूल के निर्णय से मुंह चुराने और किसी और का निर्णय मांगने से ईमान समाप्त हो जाता और मोनाफिकत (द्विधावाद) सिद्ध हो जाती है।[26]

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

---

[26] (مجموع فتاوى مقالات متنوعة) **पृष्ठ:37,शोध:मोहम्मद मोहीयुद्दिन अ़ब्दुलहमीद**

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी

موضوعِ الخطبة : **الناقض الرابع: بغض شيء مما جاء به الرسول (صلى الله عليه وسلم)**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

चौथा भंजक: (रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त की किसी चीज़ में घृणा रखना)

بغض شيء مما جاء به الرسول (صلى الله عليه وسلم)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

धर्म से प्रेम करना ईमान की अनिवार्यता में शामिल है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरें और उस का आदर करें,उस का आज्ञा मानें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لاالہ الا اللہ اور محمد رسول اللہ की गवाही से अल्लाह और उस के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम अनिवार्य हो जाता है।शहादतैन को सत्य दिल के साथ अ़मल में लाने की यह पहचान है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(قل إن كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله).

अर्थात:हे नबी!कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो,अल्लाह तुम से प्रेम करेगा।

अल्लाह के बंदो!इस्लाम धर्म से सत्य प्रेम करने वाले मामिन उस के शिक्षाओं के अनुगमन से पीछे नहीं हटते,बल्कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त आदेशों का पालन करते हैं,जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:

(إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا **سمعنا وأطعنا** وأولئك هم المفلحون * ومن **يطع الله ورسوله** ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون).

अर्थात:ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जोयें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें,तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया,और वही सफल होने वाले हैं।तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें,और उस की (यातना) से डरें,तो वसी सफल होने वाले हैं।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक में जो निर्णय कर दिया और जिस चीज़ का आदेश दिया है उस से मोमिनों को अपने दिलों में कोई तंगी नहीं होती,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم ثم **لا يجدوا في أنفسهم حرجا** مما قضيت ويسلموا تسليما)

अर्थात:तो आप के पालनहार की शपथ!वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते,जब तक कि अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें,फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें,और पूर्णत: स्वीकार कर लें।

मोमिन वे हैं जो बाह्य रुप से अपने शरीर के अंगों से और आंतरिक रूप से अपने दिल से शरीअ़त की संरक्षण एवं अनुगमन करते हैं,वह इस प्रकार से कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय से अपनी प्रसन्नता दिखाते हैं।

अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:उस व्यक्ति ने ईमान का स्वाद पा लिया जो अल्लाह के

रब,इस्लाम के धर्म और मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रसूल होने पर (दिल से) प्रसन्न हो गया।[27]

मनुष्य के लिय यह अनिवार्य है कि इस्लाम धर्म के लिए अपने दिल में विस्तीर्णता एवं खुलापन रखे,उस से प्रसन्न हो और प्रेम करे,क्योंकि वह उस पालनहार की ओर से है जो अपनी शरीअ़त में ह़कीम (तत्वज्ञ) है,अपनी मखलूक़ के हितों से अवगत है,उन पर कृपालु एवं दयालु है,अल्लाह का फरमान है:

(ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير).

अर्थात:क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सुक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?

धर्म का प्रेम प्राप्त करने के कारण एवं कारक

अल्लाह के बंदो!जिन मामलों से दिल में धर्म के प्रति प्रेम पैदा होता है,उन में यह जानना भी शामिल है कि अल्लाह ने इस धर्म को अनिवार्य कर दिया,वह अपने बंदो के हितों से अवगत है,जिन

[27] इस ह़दीस को मुस्लिम (34) ने रिवायत किया है।

आदेशों का आदेश देता है,उन में वह ह़कीम (तत्वज्ञ) और अपने बंदों पर कृपालु है।

इस्लाम धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण उस की उन विशेषताओं एवं गुणों से अवगत होना है जिन के द्वारा पूर्व के धर्मों से यह धर्म प्रमुख है,जिन की संख्या चालीस से अधिक है।[28]

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक तरीका यह जानना भी है कि जो व्यक्ति इस धर्म से प्रेम रखता और इस पर अ़मल करता है,वह मुक्ति पाएगा और जो व्यक्ति इस से मुँह फेरता है,वह नष्ट होगा।

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इस धर्म को स्वीकारने वाले अनेक गैर मुस्लिमों की स्थियों पर विचार किया जाए जो अपने ज्ञान के मानक,रंग व वंश,देश एवं धर्म में एस दूसरे से भिन्न होते हैं,यहां तक कि-सोशल मेडिया के इस युग में-

---

[28] अल्लाह तआ़ला की तौफीक़ से श्रृख्लाबद्ध "इस्लामी शरीअ़त की उतकृष्ट विशेषताएं"के विषय पर उपदेश प्रस्तुत करने का अवसर मिला,ये उपदेश इंटरनेट पर इसी विषय से प्रकाशित हैं।

इस्लाम धर्म वही है जिस की ओर सर्वाधिक आकर्षित हो रहे हैं और अपना रहे हैं।

अल्लाह के बंदो!धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इसके उत्तम शिक्षाओं से व्यक्ति अवगत हो जो पुण्य एवं भलाई की दावत देती हैं।यह शरीअ़त हर उस चीज़ की दावत देती है जिस की अच्छाई एवं उत्तमता पर स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव गवाही देती है,और हर उस चीज़ से रोकती है जिस की घृण्ता व निकृष्टता से स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव रोकती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(ومن **أحسن** من الله **حكما** لقوم يوقنون)

अर्थात:और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

तथा अल्लाह का फरमान है:

(إن الله يأمر بالعدل **والإحسان** وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون)

अर्थात:वस्तुत: अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है,और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है,और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अंब्दुर रहमान बिन सादी रहिमहुल्लाह लिखते हैं:शरीअ़त की शिक्षाएं अच्छे एवं उत्तम अ़मलों,सुंदर व्यवहार और बंदों के हित पर आधारित चीज़ों का आदेश देती हैं,न्याय,श्रेष्ठता व कृपा,दया और पुण्य एवं भालाई पर प्रोत्साहित करती हैं,अन्याय,अश्लीलता व नग्नता और दुश्चरित्रता से रोकती हैं,कमाल (पूर्ण) व जलाल (प्रतापी) की प्रत्येक वे विशेषताएं जिन्हें पैगंबरों ने सिद्ध किया,उस इस्लामी शरीअ़त ने भी सिद्ध किया,और दीनी व दुनयावी हितों पर आधारित जिन आदेशों की ओर अन्य शरीअ़तों ने बोलाई,उन के लिए इस्लाम ने भी प्रोत्साहित किया,और प्रत्येक उपद्रवी कार्य से इस्लाम ने रोका और उस से बचने का आदेश दिया।[29]

---

[२९] **थोड़े हेर-फेर के साथ "الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي" पृष्ठ संख्या:15,प्रकाशक:** دار العاصمة **,रियाज़ से लिया गया है।**

धर्म से घृणा रखना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!ईमान के विरुद्ध चीज़ों में से यह भी है कि धर्म से अथवा उस के किसी भाग से घृणा रखा जाए,चाहे यह घृणा किसी आस्था से संबंधित हो अथवा ईबातद (वंदना) अथवा मामलों अथवा व्यवहारों एवं नैतिकता से संबंधित हो,क्योंकि उस से घृणा रखने से उस के उतारने वाले से घृणा माना जाएगा जो कि अल्लाह तआ़ला है,अथवा उसे नकल करने वाले घृणा रखना माना जाता है जो कि मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।अथवा यह आस्था रखे कि ये शिक्षाएं सत्य पर आधारित नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि धर्म में सौभाग्य व सफलता नहीं है,ये सब अल्लाह की नीति,उस के कथनों एवं कार्यों में आलोचना करने के दृश्य हैं।तथा यह कि धर्म से घृणा इस्लाम एवं ईमान की वास्तविकता के विरुद्ध है,जिस का मतलब होता है अल्लाह तआ़ला के समक्ष एकेश्वरवाद के द्वारा आत्म समर्पण करना,आज्ञा के द्वारा उस का अनुगमन करना और उस के निर्धारित शरीअ़त से प्रसन्न होना।

धर्म से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

अल्लाह के बंदो!सत्य से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशषता है,अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

(والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم * ذلك بأنهم **كرهوا ما أنزل الله** فأحبط أعمالهم)

अर्थात:और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को ।

तथा अल्लाह तआ़ला ने नरक वासियों के प्रति फरमाया:

(وقالوا يا مالك ليقضِ علينا ربك قال إنكم ماكثون * لقد جئناكم بالحق ولكن أكثركم **للحق كارهون**).

अर्थात:तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार।वह कहेगा:तुम्हें इसी दशा में रहना है।(अल्लाह कहेगा):हम तुम्हारे पास सत्य लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।

अल्लाह के बंदो!शरीअ़त से घृणा उसी समय होती है जब पूरी शरीअ़त से,अथवा उस के अधिकतर भाग से,अथवा उस के किसी

छोटे भाग से घृणा रखता है,ये सब निफाक़ (द्विधावाद) एवं कुफ़्र है,क्योंकि शरीअ़त का पूर्ण भाग हो अथवा थोड़ा भाग,वे सब अल्लाह की ओर से है।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि शरीअ़त से प्रेम रखना अनिवार्य है,इस का प्रेम इस के अवतरित करने वाले के प्रे से होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,जो व्यक्ति इस प्रक्कथन को समझ ले,उस के लिए अ़मल एवं पैगंबर की जीवनी की सुरक्षा का द्वार खुल जाता है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि धर्म से घृणा रखने का एक प्रकार यह है कि पैगंबर की सुन्नत से घृणा रखी जाए,अथवा सह़ाबा से,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां) से,अथवा हिजाब व परदा के आदेश से घृणा रखी जाए,अथवा इस बात की ओर बोलाया जाए कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके इसे केवल नमाज़ रोज़े एवं ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं तक सीमित कर दिया जाए,मामलों एवं राजनीति से धर्म को बाहर रखा जाए,ये सब धर्म से घृणा रखने के विभिन्न रूप हैं,जो कि कुफ्रे अकबर है।अल्लाह का शरण।

अल्लाह के बंदो!हमारे युग में जो लोग धर्म से घृणा रखते हैं उन में धर्मनिरपेक्षता और उदारतावाद और इन जैसे अन्य जीवन प्रणाली के अनुयायी भी शामिल हैं।ये इस बात की दावत देते हैं कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके नमाज़,रोज़ा और ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं में सीमित कर दिया जाए,नि:संदेह उन की यह दावत धर्म से उनकी घृणा और उस से असंतोष का प्रतीक

है,क्योंकि यदि वे अल्लाह के धर्म से प्रेम करते तो इस अंतर की दावत न देते,उन में से कुछ लोग स्पष्ट रूप से इस की दावत देते हैं तो कुछ लोग अपने घृणा को छुपाए रखते हैं,वे अपने इस व्यवहार के कारण मोनाफिक (द्विधावादी) हैं,ईमान मो दिखाते हैं,किन्तु अंदर से रहमान की शरीअ़त से घृणा रखते हैं,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।

उन के विचलन एवं गुमराही का एक दृश्य यह है कि वे हिजाब से अपनी शत्रुता प्रकट करते हैं,और जो लोग महिलाओं को न्यायालय एवं शासन का भार देने को ह़राम कहते हैं,उन से ये खुली शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,अपने देशों में एक से अधिक विवाह को रोकने के लिए नियम एवं कानून बनाते हैं,और उन मामलों में महिला एवं पुरुष के बीच समानता का गुहार लगाते हैं जिन में अल्लाह ने अपनी पुस्तक के अंदर दोनों को अलग बताया है।उदाहरण स्वरूप मीरास,पुण्य का आदेश देने और पाप से रोकने वाले से शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,इसका कारण यह है कि वह अश्लीलता व नग्नता से प्रेम करते और अच्छी आदतों एवं व्यवहारों से घृणा रखते हैं।

धर्म से घृणा एवं प्रेम एक ऐसा कार्य है जो दिल में छुपा रहता है

अल्लाह के बंदो!यह ऐसा भंजक (इस्लाम विरोधी कार्य) है जो दिलों में छुपा रहता है,हृदय जीवित मनुष्य को चाहिए कि अपने आप का अवलोकन करता रहे ताकि उस के दिल में शरीअ़त के प्रति तंगी,अथवा उस के किसी आदेश से घृणा न रहे,इस से पहले कि वह दिन आए जिस दिन क़ब्रों से शवों को जीवित उठाए जाएंगे,दिलों के रहस्य खोल दिए जाएंगे और वही सुरक्षित रहेगा जिसे अल्लाह तआ़ला सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صــل وســلم على عبدك ورســولك محمد، وارض عن أصــحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!इस्लाम और मुसलमान को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा फरमा,हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह! हमें अपने देशों शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे ईमामों और हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का मार्ग दर्शन करने वाला और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने,अपने धर्म की उच्चता की तौफीक़ प्रदान कर और उन्हें अपने अधीन लोगों के लिए रह़मत का कारण बना।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह हम से मंहगाई,आपदा,बलात्कार,भूकंपों,आजमाइशों और समस्त आंतरिक एवं बाह्य बुरे फितनों को हम से दूर करदे,विशेष रूप से हमारे इस देश से और समान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से,हे दोनों संसार के पालनहार!

हे अल्लाह!हम से आपदा को दूर कर दे,नि:संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मुरदों पर कृपा फरमा और हम में से जो कठिनाई से जूझ रहे हैं,उन्हें सलामती प्रदान कर।

हे अल्लाह!हमारे धर्म को सही करदे,जो हमारे (दीन व दुनिया के) समस्त कार्य की रक्षा का कारण है और हमारी दुनिया को सही कर दे जिस में हमारी जीविका है और हमारे आखिरत को सही कर दे जिस में हमारा (अपनी मंज़िल की ओर) लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक पुण्य में वृद्धि का कारण बना दे और हमारे मृत्यु को हमारे लिए प्रत्येक दुष्टता से राहत बना दे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक: फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी

موضوع الخطبة : الناقض الخامس (الاستهزاء بشيء من أمور الدين)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:

पांचवां भंजक:

(धर्म के किसी आदेश का उपहास करना)

الناقض الخامس (الاستهزاء بشيء من أمور الدين)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और उस का सम्मान करें,उसकी आज्ञा मांनें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لاالہ الااللہ اور محمد رسول اللہ की गवाही देने से यह अनिवार्य हो जाता है कि अल्लाह का सम्मान,बनी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम धर्म का सम्मान किया जाए,चाहे आस्था का मामला हो अथवा पूजा व प्रार्थना का अथावा दुनयावी मामलों एवं व्यवहारों का।शहादतैन (لاالہ الااللہ اور محمد رسول اللہ) को अपने व्यवहार में अपनाने एवं ईमान में सत्य होने का यह चिन्ह है,अल्लाह तआ़ला ने अपने ऊपर और रसूल के ऊपर ईमान लाने को अपना सम्मान,अपने रसूल एवं अपने धर्म के आदर व सम्मान के साथ उल्लेख किया है,अल्लाह का फरमान है:

(إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا * لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه **وتوقروه** وتسبحوه بكرة وأصيلا)

अर्थात: (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।ताकि ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर।और सहयता करो आप की,तथा आदर करो आप का,और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रात: तथा संध्या।

अर्थात:ताकि तुम इस्लाम धर्म की सहायता के द्वारा अल्लाह की सहायता करो,उसका आदर व सम्मान करो और सुबह व शाम उस की प्रशंसा करो।

धर्म का उपहास करना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!धर्म के आदर व सम्मान का विपरीत यह है कि अल्लाह के धर्म के किसी आदेश तथा चिन्ह का,अथवा अल्लाह के रसूल का,अथवा उस के पुण्य अथवा यातना का उपहास किया जाए,जिस ने ऐसा किया उस न कुफ़्र किया,धर्म का उपहास करना इस लिय क़फ़्र है कि इस स धर्म को लागू करने वाले का उपहास होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,और यह सरीह़ (स्पष्ट) कुफ़्र है,क्योंकि हमारे ऊपर अनिवार्य है कि अल्लाह का आदर करें,न कि उस का अनादर करें,और उपहास वह व्यक्ति नहीं करता जो अल्लाह का सम्पूर्ण आदर एवं सम्मान करता हो,अल्लाह के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के लाए हुए धर्म का सम्मान करता हो,बल्कि उपहास वह व्यक्ति उड़ाता है जिस के हृदय में निफाक

(द्विधावाद) होता है।अल्लाह का शरण।यह बात ज्ञात भी है कि मोनाफिकत (द्विधावाद) का एक सबसे प्रसिद्ध चिन्ह यह है कि धर्म का उपहास करे ?इब्ने सादी रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह और उस के रसूल का उपहास करना ऐसा कुफ्र है जो धर्म से बाहर कर देता है,क्योंकि इस्लाम धर्म का आधार अल्लाह,उस के धर्म और उस के रसूल के सम्मान पर आधारित है,और उन में से किसी एक भी उपहास करना इस आधार के विपरीत और इस के बिल्कुल विरुद्ध है।[30]

धर्म का उपहास करने वाला काफिर है,इसके शरई प्रामण

अल्लाह के बंदो!पवित्र कुरान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,अल्लाह का कथन है:

ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا **نخوض ونلعب** قل أبالله وآياته ورسوله كنتم **تستهزئون** * لا تعتذروا **قد كفرتم** بعد إيمانكم

अर्थात:और यदि आप उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रह थे आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?तुम बहाने न बनाओ,तुम ने अपने ईमान के पश्चात कुफ्र किया है।

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,चाहे वह मज़ाक़ अल्लाह के संबंध में हो अथवा उस

---

٣٠ "تیسیر الکریم الرحمن فی تفسیر کلام المنان" **व्याख्या सूरह:**التوبۃ٦٥

की आयतों अर्थात क़ुरान के संबंध में हो,अथवा उस के रसूल के संबंध में हो,और चाहे उपहास करने वाला गंभीर हो अथवा गंभीर न हो।

इब्ने अबी ह़ातिम ने इस आयत की व्याख्या में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है कि:एक व्यक्ति ने ग़ज़वा-ए-तबूक के अवसर पर किसी सभा में कहा: (मैं ने अपने इन क़ारियों के जैसा (अर्थात नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सह़ाबा के जैसा) पेट पालक,झूटा और शत्रु से मुठभेड़ के समय कायरता से काम लेने वाला नहीं देखा)।उस पर सभा में उपस्थित एव व्यक्ति ने कहा: (तुम ने झूट कहा,बल्कि तुम मोनाफिक (द्विधावादी) हो,मैं यह बात अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अवश्य बताऊंगा),अत: यह सूचना आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली और क़ुरान अवतरित हुआ,अ़ब्दुल्लाह कहते हैं:मैं ने उस व्यक्ति को देखा कि वह अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की रस्सी से लटका हुआ था,पत्थरों की ठोकरें खाए जा रहा था और कहे जा रहा था: (ऐ अल्लाह के रसूल! हम तो यूं ही आपस में हंस बोल रहे थे) और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम यह उत्तर दिये जा रहे थे: (क्या अल्लाह,उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं?)।[31]

---

[31] **इस ह़दीस को शैख मुक़्बिल वादेई रह़िमहुल्लाह ने "الصحيح المسند من أسباب النزول" पृष्ठ संख्या:126 में ह़सन कहा है।**

विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि धर्म का उपहास करने वाला काफिर है

ऐ मोमिनो!धर्म का उपहास करने वाला काफिर है,यह एक ऐसा मामला है जिस पर विद्वानों की सर्वसम्मति है,वह व्यक्ति जो किसी ऐसी चीज़ का उपहास करे जिस में अल्लाह का अथवा क़ुरान का अथवा रसूल का उल्लेख हो,उस के विषय में शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब रह़िमहुल्लाह ने कहा कि वह इस अ़मल क कारण काफिर हो जाता है,क्योंकि वह रुबूबियत (अल्लाह के रब होन) एवं रिसालत (मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने) के सम्मान में धृष्टता करता है,जो कि एकेश्वरवाद के विरुद्ध है,इस लिए विद्वानों की स्वसम्मति है कि इस प्रकार का अ़मल करने वाला व्यक्ति काफिर है।

अत: जो व्यक्ति अल्लाह,अथवा उसकी पुस्तक,अथवा उस के रसूल,अथवा उस के धर्म का उपहास करे वह काफिर है,यद्यपि वह हंसी उपहास में ही ऐसा कर रहा हो,और उपहास के उद्दश्य से ऐसा न कहा हो,इस पर स्वसम्मति है।[32]

---

[32] "تیسیر العزیز الحمید فی شرح کتاب التوحید" شرح باب: من ھزل بشیء فیہ ذکر اللہ أو القرآن أو الرسول

धर्म का उपहास करने की धमकी व मनाही

ऐ मोमिनों के समूह!हमारे ऊपर अनिवार्य है कि हम ज़बान की गलतियों से सचेत रहें,क्योंकि ज़बान ही मनुष्य के नरक में जाने का सर्वाधिक कारण बनती है।जैसा कि मोआ़ज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में आया है कि उन्होंने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा:क्या हम जो बोलते हैं,उस पर भी हमारी पकड़ होने वाली है?आप ने फरमाया:ऐ मोआ़ज़!तेरी मां तुझे गुम पाए,लोगों को नरक में उन के ज़बानों के कारण ही मुंह के बल-अथवा फरमाया:नथुनों के बल-फेंका जाएगा।[33]

दूसरी ह़दीस है कि:बंदा एक ऐसा कल्मा ज़बान से निकालता है जो अल्लाह की अप्रसन्नता का कारण होता है उस के पास उस का कोई महत्व भी नहीं होता किन्तु उस के कारण वह नरक में चला जाता है।[34]

क़ुरान में आया है: ويل لكل همزة لمزة

अर्थात:विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता है और चौंटे करता रहता है।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है: ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد.

---

[33] **इस ह़दीस को अह़मद (5/331) आदि ने रिवायत किया है और के "المسند" शोधकर्ताओं ने प्रमाणों के आधार पर इसे सह़ी कहा है,ह़दीस संख्या: (22016)**

[34] **इस ह़दीस को बोखारी (6478) ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।**

अर्थात:वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।

धर्म के उपहास करने के व्यावहारिक उदाहरण

अल्लाह के बंदो!इस्लामी विद्वानों व मुसलेहीन (सुधारकों) एवं दाइयों (अल्लाह की ओर बोलाने वालों) का भी धर्म के उपहास करने का एक प्रकार है,क्योंकि इस्लामी विद्वान ये पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं,वे धर्म के ज्ञानी हैं,अत: जो व्यक्ति किसी विद्वान का उपहास करे केवल इस लिए कि वह विद्वान है तो उस ने कुफ्र किया,अथवा जो व्यक्ति किसी दाई (अल्लाह की ओर बोलाने वाला) का उपहास करे इस लिए कि वह पुण्य का आदेश देता है अथवा पाप से रोकता है तो उस ने कुफ्र किया,हमारे लिए यह अनिवार्य है कि विद्वानों एवं दाइयों का सम्मान किया जाए,क्योंकि अल्लाह ने कुरान में उन के उच्च महत्व का उल्लेख किया है,इस लिए मोमिन के लिए अनिवार्य है कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिसे सम्मानित एवं आदरणीय बताया है,वह भी उस का सम्मान करें,अल्लाह का कथन है:

يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين **أوتوا العلم درجات**

अर्थात:ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:".....ज्ञान वालों के लिए आकाशों में बसने वाले,पृथ्वी पर रहने वाले और पानी के अंदर मछलियां भी क्षमा की दुआ़ करती हैं।नि:संदहे एक विद्वान एवं ज्ञानी की एक आ़बिद (पूजारी) पर ऐसी ही प्राथमिकता है जैसे कि चौदहवीं के चाँद की प्रत्येक सतारों पे होती है,नि:संदेह ओ़लमा (इस्लामी विद्वान) पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) है और पैगंबरों ने कोई दिरहम व दीनार विरासत में नहीं छोड़ा।उन्होंने ज्ञान की विरासत छोड़ी है।जिस ने उसे प्राप्त कर लिया उस ने बड़ा भाग्य (अति भाग) पाया"।[35]

ऐ मोमिनों के समूह! धर्म के उपहास करने में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का उपहास करना भी शामिल है,दाढ़ी रखने का उपहास करना,टखने तक एज़ार (लुंगी अथवा पाजामा) पहनने का उपहास करना,अथवा मिस्वाक करनें का उपहास करना,अथवा हिजाब एवं नकाब का उपहास करना आदि।

कुछ गैबी मामलों का उपहास करना और उन का अनादर करना भी उपहास करने में शामिल है,उदाहरण स्वरूप स्वर्ग अथवा नरक का उपहास करना,जैसे यह कहना:स्वर्ग क्या चीज़ है?नरक क्या चीज़ है?इत्यादि।

---

[35] इस ह़दीस को अह़मद(5/196)ने रिवायत किया है और के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन लेग़ैरेहि माना है।

कुछ आस्था संबंधित मामलों एवं चीज़ों का उपहास करना भी इस में शामिल है,जैसे सह़ाबा के न्याय,आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता,यह कुफ़्र है,क्योंकि यह क़ुरान को झुठलाना होता है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने आप के सह़ाबा की प्रशंसा की है और उन से अपनी प्रसन्नता जताई है,जैसा कि सूरह التوبہ[३६],सूहर الفتح,[37]सूरह الحشر[३८],में आया है।इसी प्रकार से आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की लांछन से उस की मुक्ति की गवाही भी दी है,क्या इस के पश्चात भी यह जाएज़ है कि कोई आए और सह़ाबा का उपहास करे और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के मान-सम्मान पर कीचड़ उछाले,मानो अल्लाह ने अपने नबी के लिए ऐसे सह़ाबा और ऐसी पत्नी का चयन किया है जो सदाचारी एवं सालेह नहीं थे?कदपि नहीं!

ऐ लोगो! उपहास करने में स्पष्ट कथन एवं कार्य अथवा किसी पत्रिका अथवा अन्य मीडिया में स्पष्ट लेख प्रकाशित करना भी शामिल है,तथा अस्पष्ट रूप से उपहास करना भी इस में शामिल है जैसे आंख और हाथ से इशारा करना और जबान निकालना आदि।[39]

---

[३६] आयत:100

[३७] आयत:29

[३८] आयत:8-9

[३९] शैख मोह़म्मद बिन अ़तीक़ रह़िमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक:"سبیل النجاۃ والفکاک"में इस का उल्लेख किया है।

ज्ञात हुआ कि उपहास का कोई मामूली रूप भी क्षमा किये जाने वाला नहीं है,बल्कि उस का मामूली रूप भी उस के बड़े रूप के जैसा ही है,अल्लाह का शरण,जिस प्रकार का भी उपहास हो सब एक समान है।

धर्म का उपहास करने वालों के प्रति शासकों एवं मुसलमानों का दायित्व

ऐ लोगो!अल्लाह तआ़ला अथवा उस के नबी का उपहास करने वाले की हत्या शासक के लिए अनिवार्य हो जाता है।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति किसी को अल्लाह अथवा रसूल अथवा धर्म का उपहास करता हुआ देखे,उस के लिए अनिवार्य है कि उस का खंडन करे और चुप न रहे,कम से कम उस सभा से उठ कर चला जाए क्योंकि ऐसे लोगों के सभा में प्रसन्नता के साथ बैठने से वह काफिर हो जाता है और इस्लाम से निकल जाता है,जैसा कि अल्लाह का फरमान है:

وقد نزل عليكم في الكتاب أن إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها **فلا تقعدوا معهم** حتى يخوضوا في حديث غيره إنكم إذا مثلهم إن الله **جامع** الكافرين والمنافقين في جهنم جميعا

अर्थात:और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पस्तक (क़ुरान) में यह आदेश उतार दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है,तथा उन का उपहास किया जा रहा है,तो उन के साथ न बैठो,यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें।नि:संदेह तुम

उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे।निश्चय अल्लाह मोनाफिकों (द्विधावादियों) तथा काफिरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

ऐ विश्वास वाले लोगो!इस आयत पर विचार करें!जिस प्रकार से वह दुनिया के सभा में धर्म का उपहास करने वालों के साथ बैठे रहे,उसी प्रकार से आखिरत में नरक के अंदर भी उन के साथ वह भी यातना पाएंगे,अल्लाह का शरण।

ऐ अल्लाह के बंदो!शरीअ़त के सम्मान,इसे अवतरित करने वाले अर्थात अल्लाह के सम्मान,इसे नकल करने वाले अर्थात पैगंबरों के सम्मान और इसका प्रचार प्रसार करने वाले अर्थात आ़लिमों एवं मुसलेहीन के सम्मान की अनिवार्यता को बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस मार्ग का उल्लंघन करेगा वह बड़े खतरे का सामना करेगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि उपहास करना यहूदियों की विशेषता है,उन्होंने अल्लाह तआ़ला का उपहास करनते हुए कहा: يد الله مغلولة

अर्थात:अल्लाह के हाथ बँधे हुए हैं।

अधिक कहा: إن الله فقير ونحن أغنياء

अर्थात:अल्लाह निर्धन और हम धनी हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना काफिरों की पहचान है,अल्लाह तआ़ला ने उन के उपहास करने को अपराध कहा है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

إن الذين **أجرموا** كانوا من الذين آمنوا **يضحكون** * وإذا مروا بهم **يتغامزون** * وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا **فكهين** * وإذا رأوهم قالوا إن هؤلاء **لضالون**.

अर्थात:पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।और जब उन के पास से गुजरते तो आँखें मिचकाते थे।और जब अपने परिवार में वापिस होते थे।और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे:यही भटके हुये लोग हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना मोनाफिक़त (द्विधावाद) की पहचान और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) का गुण है,जो ईमान तो देखाते हैं,किन्तु अपने अंदर रहमान के धर्म से घृणा छुपाए रखते हैं,इन में धर्मनिरपेक्ष और उदारवादियों और उन जैसे अन्य लोग भी शामिल हैं,वह भालाई का आदेश देने और पाप से रोकने वालों का उपहास करते हैं,हिजाब का उपहास करते हैं,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस में आए कुछ उपचारों एवं इलाजों का उपहास करते हैं उदाहरण स्वरूप ऊंट के पैशाब से इलाज करना। अलह़मदुलिल्लाह अल्लाह ने उन के षड्यंत्रों को विफल कर दिया और वे किसी भी चीज़ से लाभान्वित नहीं हुए,अत: यूरप में गैर मुस्लिमों के चिकित्सा केंद्रों से अनेक चिकित्सा शोध सामने आ चुके हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि ऊंट के पैशाब से इलाज करना सही है,जैसा कि आप की ह़दीस में आया है।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : الناقض السادس: السحر

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:

छठवां विच्छेद: जादूगरी

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं उसको सम्माननीय जानें, उसकी आज्ञा करें एवं अवज्ञा से वंचित रहें, एवं ज्ञात रखें कि माननीय दूतों की आवाहन की वास्तविकता ही है अल्लाह की उपासना एवं उसके नकारात्मक आदेशों से वंचित रहना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जो भी चीज़ें हैं, तुम में सर्वश्रेष्ठ स्थापित होने वाली चीज़ अल्लाह की उपासना में बहुदेव वाद, अर्थात विभिन्न प्रकार की उपासनाओं को अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए

स्थापित करना, उदाहरण स्वरूप अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारना, अल्लाह के अतिरिक्त हेतु पशुओं का बलिदान देना, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए मन्नतें मानना, काबा के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान का चक्कर लगाना, उदाहरण स्वरूप: क़ब्रों एवं मज़ारों का चक्कर लगाना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जादू को अपनाना भी है एवं आज के उद्देश्य का शीर्षक भी यही है।

● जादू की परिभाषा, उसके प्रकार एवं उदाहरण:

अल्लाह के दासो! जादू उन तावीज़, गंडों, गांठों एवं झाड़-फूंक को कहा जाता है जो हृदय, शरीर अथवा दृश्य को प्रभावित करता है, एवं उन्हें रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता है, अथवा मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, अथवा पति पत्नी के बीच को दूरी उत्पन्न करता है, अथवा व्यापार आदि करने वाले दो व्यक्तियों के बीच घृणा को जन्म देता है।

(देखें: अल्-मुग़नी, किताबुल्-मुरतद, फ़स्ल फ़िस्सहर: ९/२९९)

अल्लाह के दासो! जादू दो प्रकार के होते हैं: एक वास्तविक द्वितीय काल्पनिक। वास्तविक जादू के तीन प्रकार हैं: एक प्रकार वह है जो शरीर को प्रभावित करता है एवं उसे रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता, द्वितीय प्रकार जो हृदय को प्रेम एवं घृणा के आधार पर प्रभावित करता है। उदाहरण स्वरूप पति के हृदय में पत्नी का प्रेम डाल देता है, जिससे वह घृणा कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत। इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को सुंदर दिखने लगती है, इसे (अ़त्फ़) के नाम से जाना जाता है, अथवा पत्नी को पति की दृष्टि में घृणित बना देता है जिससे वह

प्रेम कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत, इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को कुरूप दिखने लगती है, इसे (सर्फ़) के नाम से जाना जाता है, वास्तविक जादू का तीसरा प्रकार वह है जो मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति यह भ्रम रखता है कि उसने कोई काम किया है हालांकि उसने कोई काम नहीं किया है इस जादू का उदाहरण वह है जो लबीद बिन अअ़सम नामक यहूदी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किया, इस कारणवश आपको यह भ्रम होता कि आपने कोई काम किया है हालांकि आप वह नहीं किए होते, कई महीनों तक आप इस जादू से प्रभावित रहे।

(बुख़ारी:५७६६, मुस्लिम: २१८९) अल्लाह के दासो! जादूगर अपने जादू हेतु दुष्टदेव से सहायता लेता है वह इस प्रकार की जादूगर जब जादू करने की इच्छा करता है, तो उसके आत्मा पर वह अपवित्रता एवं दुष्टता प्रकट होती है जिसके भीतर वह जादू किए हुए व्यक्ति को डालना चाहता है, इस कारणवश वह दुष्ट देवों की आत्मा से सहायता प्राप्त करता है फिर कुछ गांठें लगाता है एवं उसमें थूक के साथ फूंक मारता है, जिसे (नफ़स) के नाम से जाना जाता है, जिसका उल्लेख अल्लाह के कथन में आया है:

مِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ .

अर्थात: और गांठें लगाकर उन में फूंक मारने वालियों की दुष्टता से भी मैं शरण चाहता हूं।

फूंक मारने वालियों का अर्थ वह आत्माएं हैं जो गांठों में फूंक मारते हैं, क्योंकि जादू का प्रभाव दुष्ट आत्माओं की ओर से ही होता है, एवं उनसे ही

जादू का प्रभाव स्पष्ट होता है, इस कारणवश कि उन दुष्ट आत्माओं से ऐसी सांसें निकलती हैं जो दुष्टता एवं कठिनाई से मिलती जुलती है, एवं इसमें इसी से मिलता-जुलता थूक भी मिला होता है, इस कारणवश दुष्ट देवों के आपसी सहायते से जादू किए हुए व्यक्ति को कष्ट पहुंचाया जाता है, एवं अल्लाह के सांसारिक भाग्य की अनुमति से जादू स्थापित हो जाता है।

وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنۡ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ .

अर्थात: वह उसके साथ कभी भी कोई हानि पहुंचाने वाले नहीं थे परन्तु अल्लाह की अनुमति के अतिरिक्त।

(देखें: बदाइउ़ल्-फ़वाइद, पृष्ठ संख्या: ७३६-७३७)

अल्लाह के दासो! कुछ व्यक्तिगण जादूगर के पास जाते हैं ताकि वे उसे उसके बाल बच्चों से और पत्नी से दूर कर दे, इस कारणवश वो लंबे समय तक अपनी पत्नी एवं बाल बच्चों से लापरवाह हो जाता है, ताकि वह एक चिन्हित समय तक अपनी पत्नी बाल बच्चों से अलग रहने में सक्षम हो सके एवं उनसे दूर क्रिया कर्म हेतु यात्रा कर सकें एवं जब लौटने का समय निकट आ जाए तो जादू समाप्त हो जाए।

अल्लाह के दासो! जादूगर लोगों को धोखे में रखते हैं इस कारणवश उनके पास जब कोई आता है तो उसके समक्ष वह क़ुरआन का सस्वर पाठ करते हैं ताकि उसे धोखे में डाल सके, और वह उनके संबंध में अच्छा भ्रम रखे, और यह समझे कि ये जादूगर अल्लाह के दोस्तों में से है, ऐसे व्यक्तिगण अपने जादू को चमत्कारिक क्रियाओं से विशेष स्वरुप प्रदर्शित करते हैं, जबकि वास्तव में वह जादू है, जिसे प्राप्त करना बल्कि उसके निकट जाना अवैध

है, बल्कि उस से दूरी बनाए रखना एवं उसे नकारात्मक समझना अनिवार्य है।अल्लाह के दासो! काल्पनिक जादू का एक ही द्वार है, वह है दृश्य को प्रभावित करना, शरीर, हृदय एवं मानसिक शक्ति को नहीं, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति वस्तुओं को, , अवास्तविक रूप में देखने लगता है, जबकि वास्तव में वह वस्तु कुछ भी परिवर्तित नहीं होती, यह वही जादू है जो फ़िरऔन के जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम के साथ किया, यह एक निकृष्ट कर्म है।

ए लोगो! इस प्रकार का जादू -अर्थात काल्पनिक जादू- वास्तव में स्थापित होता है, इस कारणवश यह देखने वाले के नेत्र में उसके वास्तविक एवं इंद्रिय-संबंधी प्रभाव स्थापित होता है परंतु यह प्रभाव उस वस्तु पर स्थापित नहीं होता जिसका वह दृश्य कर रहा होता है, बल्कि वह को वस्तु अपनी वास्तविक स्थिति में स्थित रहता है, उसकी स्थिति अल्लाह की अनुमति के बिना परिवर्तित नहीं होती, क्योंकि इसी एक वस्तु की वास्तविक स्थिति को दूसरी स्थिति में स्पष्ट करना यह अल्लाह की विशेषताओं में से है, जिसका कोई संगी एवं साझी नहीं।

आधुनिक काल में काल्पनिक जादू में वह जादू भी सम्मिलित है जिसे सर्कस या पहलवानी खेल के नाम से जाना जाता है, जिसके माध्यम से जादूगर लोगों की बुद्धि को प्रभावित करता है जिस कारण वश उन्हें वस्तुएं अपने वास्तविक स्थिति से कुछ विभिन्न दिखाई देती हैं, वे अपने काम को जादू नहीं कहते ताकि लोग घृणा ना करें, बल्कि पहलवानी खेल आदि का नाम देते हैं, किंतु इससे आदेश में कोई परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि मान्यता

वास्तविकता को ही प्राप्त होता है, नामों का नहीं। उनके काल्पनिक जादू का उदाहरण यह है कि कोई अपने बालों से कार को खींचता है, कोई अग्नि खाता हुआ दिखाई देता है, कोई धारदार हथियार से अपने ऊपर आक्रमण करता है, अथवा अपनी जीभ काट लेता है, कोई पशुओं के नितंब से प्रवेश करता है एवं मुंह से बाहर आता है, अथवा अपने वस्त्र के भीतर से पक्षी निकालता है, किसी की छाती पर लोगों की दृश्य के समक्ष कार चल जाती है, ये एवं इन जैसे अन्य कर्तव्य जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हैं ये या तो दुष्ट देवों की सहायता से स्थापित होते हैं जो इस की बोझ का सहन करता है, अथवा देखने वालों के दृश्य में इसकी कल्पना को जन्म दिया जाता है, एवं यह दोनों ही चीज़ें दुष्ट देवों की सहायता से ही पूरे होते हैं।जादूगर के कुफ़्र और जादू करवाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह के दासो! जादूगरों का खंडन क़ुरआन के एक अन्य श्लोक में भी आया है:

وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ.

अर्थात: जादूगर कहीं से भी आए सफ़ल नहीं होता।

इसके अतिरिक्त यह श्लोक:

وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُون.

अर्थात: जादूगर सफ़ल नहीं हुआ करते।

यह दोनों श्लोक जादूगर के समान सफ़लता को नकारता है, जो कि केवल उस व्यक्ति के पक्ष में होता है जो कुफ़्र में लथपथ हो चुका हो।

(देखें: अल्लामा शनक़ीती रहिमहुल्लाह का कथन अल्लाह ताआ़ला के फ़रमान: وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ. **के उल्लेख में, उन्होंने इस श्लोक से जादूगर के कुफ़्र को स्थापित किया है।)**

मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबानी अल्लाह के इस कथन में भी जादूगरों का खंडन आया है:

مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ.

अर्थात: जो कुछ तुम लाए हो जादू है निश्चिंत बात है कि अल्लाह इसको तितर-बितर कर देता है अल्लाह ऐसे विद्रोहियों का काम नहीं बनने देता।

यह श्लोक इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि जादूगर पृथ्वी में विद्रोही ही होते हैं।

उपरोक्त उल्लेख किए गए श्लोक इस बात के साक्ष्य हैं कि जादूगर काफ़िर है एवं जादू कराना अवैध है और सृष्टि पर इसका बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी गणना बहुत ही घातक श्रेणी में की है। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअ़ंहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सात घातक पापों से वंचित रहो, सहाबा ने प्रश्न किया: अल्लाह के दूत! वे क्या हैं? आप ने उत्तर दिया: अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना एवं जादू करना...हदीस।

(बुख़ारी:२७६६, मुस्लिम: ८९ ने रिवायत किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया, जिस ने भविष्यवाणी की या जिस के लिए की गई, जिसने जादू किया या

उसके लिए किया गया वह हम में से नहीं है, जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने के वाले व्यक्ति के पास गया एवं उसकी बात को सत्य स्वीकार किया तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित किए गए शरीयत (धर्म) को नकारा (कुफ़्र) किया।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२) में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उससे प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि इससे हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सोंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है...अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउ़ज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा से रिवायत किया है, जैसा कि कश्फ़ुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेइ़स्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: (२१९५) में सहीह स्थापित किया है।}

बैहक़ी ने क़तादह से रिवायत किया है कि कअ़ब ने कहा: सब श्रेष्ठ एवं सर्वसम्मानीय अल्लाह का कथन है: सत्य दास वह नहीं है जो जादू करे एवं

जिसके लिए जादू किया जाए, अथवा जो भविष्यवाणी करे एवं जिसके हेतु भविष्यवाणी किया जाए, अथवा जो अपशगुन ले एवं जिसके हेतु अपशगुन लिया जाए, मेरा सत्य दास वह है जिसका मुझ में आस्था हो एवं मुझ पर विश्वास करे। (देखें: शअ़बुल्-ईमान: ११७६)

ए विश्वासियों का समूह! जादू कराने हेतु जादूगर के निकट जाना कुफ़्र है, - अल्लाह का शरण- उसके काफ़िर होने का कारण यह है कि जाने वाला उस जादू से प्रसन्न हुआ अथवा उसे अपने ऊपर एवं मनुष्यों पर लागू होने को सराहा।

इतना ही नहीं बल्कि जादू की सराहना करना भी कुफ़्र है, भले ही वह उसे ना अपनाए, क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, यह ऐसा ही है जैसे कि कोई बुत पूजा को सराहे अथवा चलिपा (सलीब) के समक्ष माथा टेकने को सराहे तो ऐसा व्यक्ति काफ़िर है, भले ही वह बुत पूजा ना करे अथवा चलिपा के समक्ष माथा ना टेके, इस कारणवश जो व्यक्ति यह कहे कि "मैं जादू करता हूं एवं ना ही इसकी ओर किसी को प्रोत्साहित करता हूं परंतु मैं जादू के कर्म को अपने गृह में एवं समाज में हृदय से स्वीकार करता हूं एवं इसे नहीं नकारता हूं"। तो ऐसा व्यक्ति भी काफ़िर है क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, एवं जो व्यक्ति अंततः अपने हृदय से कुफ़्र को ना नकारे उसके हृदय में विश्वास (ईमान) नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। - अल्लाह का शरण-जादूगर एक साथ तौहीद-ए-उलूहिय्यत एवं तौहीद-ए-रुबूबिय्यत दोनों में अल्लाह के साथ बहुदेववाद को स्वीकार करता है।

अल्लाह के दासो! ये जादूगर जो काल्पनिक जादू करते हैं और यह दावा करते हैं कि उनके पास वास्तविकता को परिवर्तन करने की क्षमता है, तो ऐसे लोग अपने इस कर्म के माध्यम से ब्रह्मांड में उलटफेर करने का दावा एवं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से सहायता प्राप्त करने दोनों को एक साथ अपनाते हैं, प्रथम चीज़ रुबुबिय्यत में बहुदेववाद है एवं द्वितीय चीज़ उलूहिय्यत में बहुदेववाद है, एवं बहुदेववाद और भटकने हेतु यह दोनों कर्म बहुत हैं, रुबुबिय्यत में उन के बहुदेववाद का कारण यह है कि यह वास्तविकता को परिवर्तित करने का दावा करते हैं जबकि सत्य यह है कि वास्तविकता को परिवर्तित करना उस अल्लाह के हाथ में है जिसका कोई संगी नहीं, बल्कि अल्लाह ही केवल ब्रह्मांड का समाधान करता है वही सृष्टिकर्ता है वही किसी चीज़ को एक लिंग से द्वितीय लिंग में परिवर्तित करता है, बल्कि जादूगर दावा करते हैं कि वे इस विषय में अल्लाह का साझी है, इस संबंध में वे झूठे हैं, क्योंकि जिन वस्तुओं के परिवर्तित करने का ये दावा करते हैं वास्तव में वह चीज़ परिवर्तित नहीं होती, बल्कि जादू का प्रभाव समाप्त होते ही नेत्रों से उसकी योग्यता भी समाप्त हो जाती है, फिर लोगों के समक्ष स्पष्ट हो जाता है फिर वास्तविकता अपने असली रूप वापस आ जाती है।

उलूहिय्यत में उन के बहुदेववाद का कारण यह है कि वे दुष्टदेवों से सहायता लेते हैं उनके समक्ष माथा टेकते हैं एवं उनकी उपासना करते हैं उनके नाम पर पशुओं का बलिदान देते हैं कभी कभार उन्हें प्रसन्न करने हेतु क़ुरआन का भी अपमान कर बैठते हैं, क्योंकि दुष्टदेव इस बात के अतिरिक्त उनसे कोई बदला नहीं चाहता कि वे कुफ़्र करें, एवं धरती पर विद्रोह करें इस

कारणवश वह जादूगर उस दुष्टदेव की उपासना करता है, जो उसकी सेवा करता है यह उसके कुफ़्र का कारण है, एवं दुष्टदेव को यह लाभ प्राप्त होता है कि जादूगर उसकी उपासना करता है, क्योंकि आदम की संतान से दुष्टदेव इसी बात की इच्छा करते हैं, जैसा कि अल्लाह का कथन है:

أَلَمۡ أَعۡهَدۡ إِلَيۡكُمۡ يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعۡبُدُواْ ٱلشَّيۡطَٰنَۖ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ. وَأَنِ ٱعۡبُدُونِيۚ هَٰذَا صِرَٰطٞ مُّسۡتَقِيمٞ

अर्थात: ए आदम की संतान! क्या तुम से शपथ नहीं लिया था कि तुम दुष्टदेव की उपासना ना करना, वह तुम्हारा स्पष्ट स्वरूप शत्रु है, एवं मेरी ही उपासना करना, सीधा मार्ग यही है।

उपरोक्त उल्लेखों से यही ज्ञात हुआ कि किताब-व-सुन्नत एवं उम्मत की सहमति के प्रकाश में जादू एक अवैध कर्म है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/१७१)

● जादूगर को उस दुष्टदेव से क्या लाभ प्राप्त होता है जो उसकी जादूगरी में सहायक का कार्य करता है, एवं लोगों से उसे क्या लाभ मिलता है?

अल्लाह के दासो! जादूगर दुष्टदेवों से बहुत ही अधिक लाभार्थी होता है, उदाहरण स्वरूप यह कि दुष्टदेव उन्हें बहुत दूर स्थान तक बहुत ही शीघ्रता पूर्वक ले जाता है एवं इसी प्रकार अन्य लाभ हैं।

जादूगर मनुष्य की दुर्बलता का दुरुपयोग करता है ताकि इस जादू के बदले उससे बहुत सी संपत्ति प्राप्त कर ले। यह तीनों प्रकार के व्यक्ति दुष्टदेव

जादूगर एवं जो जादू कराता है, वे अपने सांसारिक एवं परलोक के जीवन को नष्ट करता है।जादूगरों के संबंध में मुसलमानों एवं शासकों का दायित्व। अल्लाह के दासो! जादू करने एवं जादूगरों के निकट जाने से वंचित रहना अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त जांच पड़ताल से संबंधित जो विशेष विभाग हैं; जादूगरों के बारे में उन्हें सूचित करना आवश्यक है, इस शर्त के साथ कि वहां इस्लाम धर्म शासन हो, केवल इस से काम नहीं चलेगा कि मनुष्य जादूगर के निकट ना जाए, मुसलमान हेतु वैध नहीं कि वे जादूगरों के बैठक स्थलों में उपस्थित हो, उनकी संख्या बढ़ाए, उनका बाज़ार चमकाए, चाहे टेलीविज़न चैनल एवं एप्लीकेशन ही के माध्यम से क्यों ना हो, चाहे मनोविनोद ज्ञान अथवा उनके कर्तव्य से अवगत होने अथवा अन्य कारणों के आधार पर ही क्यों ना हो।

अल्लाह के दासो! जादूगरों एवं इस प्रकार के अन्य कुफ़रिया दुष्कर्म करने वालों पर अल्लाह के पापदंडों (हुदूद) का लागू करना सर्वश्रेष्ठ उपासनाओं में से है, क्योंकि यह लोग धरती पर विद्रोह फेलाते हैं। इसी कारणवश अबु हुरैरा रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: धरती पर एक (अपराधी को) पापदंड देना धरती वालों हेतु लगातार वर्षा होने से अधिक श्रेष्ठ है।

(इस हदीस को इब्ने माजा: २५२८ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए सब उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त नसई: ४९१९, इब्ने ह़िब्बान: ४३९८ एवं अह़मद २/३६२ ने रिवायत किया है, एवं अल्-बानी ने अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: २३१ में सहीह स्थापित किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह का कथन है: इसी प्रकार यह भी अनिवार्य है कि उनके कर्म (जादूगरी) पर जिन वस्तुओं से सहायता मिलती है पूर्णत: नष्ट कर दिया जाए, उन्हें समान मार्गों पर बैठने से रोका जाए, घर का मालिक उन्हें घर भाड़े पर ना दे, यह अल्लाह के मार्ग में जिहाद का एक सर्वश्रेष्ठ भाग है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/९४-९७, कुछ संक्षेप एवं उलटफेर के साथ)

अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है|

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد !

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि जादू से वंचित रहने की एक विधि यह भी है कि प्रातः एवं साईं का धार्मिक स्मरण व्यवस्था पूर्वक किया जाए, परंतु जादू के लग जाने के बाद उसके उपचार हेतु तीन विधियां हैं: प्रथम विधि: यह सबसे महत्वपूर्ण है: प्रातः एवं साईं का स्मरण व्यवस्था पूर्वक किया जाए, द्वितीय विधि: यह एक बहुत ही लाभदायक उपचार है, वह यह कि जादू की स्थान के खोज का प्रयास किया जाए कि वह धरती के नीचे है अथवा पर्वत के ऊपर, अथवा कहां है? जब स्थान की खोज हो जाए एवं उसे वहां से निकाल कर नष्ट कर दिया जाए तो जादू का समापन हो जाता है, तीसरी विधि: यह उस व्यक्ति हेतु लाभदायक उपचार है जिसे अपनी पत्नी से संभोग करने में बाधा आती हो, हरे बेर की सात पत्तियां ले, उन्हें पत्थर आदि से पीस ले फिर उसे एक बर्तन में रख ले फिर उस पर इतना पानी डाले जो स्नान करने योग्य हो, उस पानी में आयतल्-कुर्सी सूरह काफ़िरून, सूरह इख़लास सूरह फ़लक़, सूरह नास एवं जादू के उन श्लोकों का सस्वर पाठ करे जो सुरह अअ़राफ़, सूरह यूनुस एवं सूरह ताहा में आए हैं, (अर्थात: सुरह अअ़राफ़, श्लोक संख्या: ११७-१२०, सूरह यूनुस: श्लोक संख्या: ७९-८२, सूरह ताहा: श्लोक संख्या: ६५-६९) इसके पश्चात उस पानी में से तीन बार पी ले जिसमें इन श्लोकों का सस्वर पाठ किया गया हो,

फिर बचे हुए पानी से स्नान कर ले, इस प्रकार रोग दूर हो जाएगा इंशाल्लाह! यदि इसे दो या दो से अधिक बार भी प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ जाए तो कोई बात नहीं जब तक कि रोग समाप्त न हो जाए।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.

अर्थात: " अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडी पने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिन से अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिनसे हम अवगत हैं अथवा जिनसे हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे उपहारों के समापन होने से, तेरे स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरे अचानक आने वाले प्रकोप से, एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध से!

हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे। हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

लेखक:

माजिद बिन सुलेमान अल्-रसी

अनुवादक:

तारिक़ बदर सनाबिली

موضوع الخطبة : الناقض السابع: الكهانة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:

सातवां विच्छेद: भविष्यवाणी करना।

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह तआ़ला से भय करो एवं उसका डर अपने हृदय में जीवित रखो, उसकी आज्ञा करो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, एवं यह ज्ञात रखो के अल्लाह के एकेश्वरवाद में यह बात सम्मिलित है कि उसके नामों एवं विशेषताओं में केवल अल्लाह को जाना जाए, उन विशेषताओं में अल्लाह का परोक्षज्ञान भी है, परोक्षज्ञान विशेषकर अल्लाह के लिए

होना किताब-व-सुन्नत एवं महाज्ञानियों की सहमति से स्थापित है, क़ुरआन का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿قُل لاَّ يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ الغَيْبَ إِلاَّ اللَّهَ﴾.

अर्थात: कह दो कि जो लोग आकाशों में एवं धर्तियों में है अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी परोक्षज्ञानी नहीं है।

रही बात हदीस तो ख़ालिद बिन ज़कवान ने रबीअ़ बिन्त मुअ़व्विज़ से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बालिका को यह कहते हुए सुना: हमारे बीच एक नबी है जो इस बात से अवगत है कि कल क्या होने वाला है,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह बात मत बोलो,कल की बातें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

(इस हदीस को इब्ने माजा: १८९७ ने रिवायत किया है एवं अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है,इसका यथार्थ सहीह बुख़ारी: ५१४७ में है।)

इब्ने उ़मर रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: गुप्त की कुंजियां पांच हैं,जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता,अल्लाह के अतिरिक्त इस बात से कोई अवगत नहीं कि कल क्या होने वाला है,एवं अल्लाह के अतिरिक्त

कोई नहीं जानता की महिलाओं के गर्भ में क्या कटौती-बढ़ौती हुई, (इस का अर्थ यह है कि महिला के पेट में गर्भ नौ महीने से कितने ज़्यादा या कितना कम रहता है,इस बात की जानकारी केवल अल्लाह तआ़ला को है,अल्लाह का कथन है: स्त्रियां अपने गर्भ में जो कुछ रखती हैं उससे अल्लाह भली-भांति अवगत है एवं पेट का बढ़ना घटना भी,इ़मादुद्दीन इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह के लेख तफ़सीरूल्-क़ुरआनिल्-अज़ीम: में सूरह-रअ़द के उपरोक्त १लोक के उल्लेख का अध्ययन करें!) अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि वर्षा कब होगी,एवं कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उसकी मृत्यु कहां होगी, और अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि प्रलोक कब स्थापित होगा।

(इस हदीस को बुख़ारी: ४७९७ ने रिवायत किया है।)

ज्ञात हुआ कि परोक्षज्ञान विशेषकर अल्लाह हेतु होना उस अल्लाह के लिए स्थित विशेषता है जिसका कोई साझी व संगी नहीं,ना कोई निकट संबंधी देवदूत अथवा ना कोई अवतरित किए गए दूत,इस कारणवश जिसने अपने हेतु एवं किसी अन्य हेतु प्रोक्षज्ञान का दावा किया उसने अल्लाह एवं उसकी सृष्टि के बीच एक ऐसी चीज़ में प्रतिभागी स्थित किया जो केवल अल्लाह की विशेषताओं में से है, उसे अल्लाह के जैसा स्थित किया,एवं महा बहूदेववाद (शिर्क-ए-

अकबर) का पाप किया, अपने युग के इमाम अहले सुन्नत नुऐम बिन हम्माद अल्-ख़ुज़ाई का कथन है: जिसने अल्लाह को उसकी सृष्टि के जैसा स्थित किया उसने कुफ़्र किया।

भविष्यवक्ता की पारिभषिक

अल्लाह के दासो! कुछ लोगों ने परोक्षज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साझी होने का दावा किया है, अल्लाह तआ़ला इस दावे से बरी एवं सर्वोच्च है, यह भविष्यवक्ता हैं यह भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति हैं जो भविष्य के गुप्त बातों की ज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता एक ऐसा नाम है जिसमें भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी एवं नक्षत्र की विद्या रखने वाले सभी सम्मिलित हैं, जो परोक्षज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता को अरबी भाषा में "अ़र्राफ़" कहा जाता है, जो कि "अ़रफ़" से अतिशयोक्ति का शब्द है, शेख मोहम्मद बिन उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन है: फ़अ़्आ़ला वज़न पर है जो अल्-कोहन वांछित है जिसका अर्थ होता है अनुमान लगाना, निराधार वस्तुओं के माध्यम से वास्तव का पता लगाना, अशिक्षितता काल में यह उन लोगों का व्यवसाय था जिनसे दुष्टदेव आकर भेंट करते थे, एवं आकाश से चुराई हुई बातों को बताते थे, इन दुष्टदेवों के माध्यम से आकाश से चुराई हुई जो भी बातें इन तक पहुंचती, उनमें असत्य एवं मनघड़त बातें मिलाते थे एवं लोगों

के समक्ष उल्लेख करते थे, यदि उनके बताए हुए बात के अनुसार कुछ होता तो लोग उनके धोखे में आ जाते एवं उन्हें अपने बीच न्याय करने और भविष्य की बातें जानने हेतु अपना ठिकाना बना लेते, इसीलिए हम कहते हैं: भविष्यवक्ता वह है जो भविष्य के गुप्त चीज़ों की सूचना दे।

शेख मोहम्मद बिन उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ए मोमिनो! भविष्यवक्ता परोक्षज्ञान का दावा करने हेतु दो में से एक विधि को अपनाता है ,

प्रथम विधि: उन दुष्टदेवों से बातें लेना जो देवदूतों की कुछ बात आकाश से उचक लेते हैं, इसका साक्ष्य सहीह बुख़ारी की आ़इशा रज़िअल्लाहुअ़ंहा से मरवी यह एक मरफ़ूअ़ रिवायत है कि देवदूत बादलों में आते हैं, एवं उस कार्य का उल्लेख करते हैं जिस का निर्णय आकाशों में लिया जा चुका होता है, तो दुष्टदेव चुपके से देवदूतों की बातें उड़ा लेते हैं एवं भविष्यवक्ताओं को बता देते हैं, एवं वह सत्य बात में अपनी असत्य बात मिलाते हैं, (फिर उसे अपने भक्तों को बता देते हैं।) (सहीह बुख़ारी: २३१०)

अल्लाह के दासो! ज्ञात हुआ कि भविष्यवक्ता असत्य की सूचना लोगों को देता है, यदि इस बात में कोई सत्यता भी होती है तो वह

दुष्टदेवों की चुराई हुई बात होती है, ना कि उसके परोक्षज्ञान का कोई हस्तक्षेप होता है, कभी-कभी कुछ लोग इसी सत्य बात के कारण उत्पात में पड़ जाते हैं, एवं इनमें जो असत्य बातें होती हैं उनकी ओर ध्यान नहीं देते, एवं यदि उसकी सारी बात असत्य रही तो कभी कभार भक्तगण संपूर्ण बातों को स्वीकार कर लेते हैं।

द्वितीय विधि: जिनों से सहायता प्राप्त करना, चाहे जिन मनुष्य का संगी हो अथवा कोई अन्य, इसी कारणवश प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन लगा हुआ है, जो उसे दुष्टकर्म का आदेश देता है, आइशा रज़िअल्लाहुअंहा से मरवी है कि कुछ व्यक्तियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भविष्यवक्ता के संबंध में कुछ पूछा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से फ़रमाया: वह कोई चीज़ नहीं है, उन्होंने कहा हे अल्लाह के दूत! कभी कभार यह भविष्यवक्ता ऐसी बातें बताते हैं जो सत्य स्थित हो जाती हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "वह बात है जो सत्य स्थित होती हैं उन्हें कोई जिन देवदूतों से सुनकर उड़ा लेता है, फिर अपने मित्र के कान में मुर्ग़े की स्वर के जैसे डाल देता है, फिर उस सत्य बात में भविष्यवक्ता १०० असत्य मिला देता है"।

(बुख़ारी: ६२१३, मुस्लिम: २२२८, उल्लेख किए गए शब्द बुख़ारी के हैं।)

यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य के साथ रहने वाले जिन से भविष्यवक्ता का संबंध होता है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन लगा होता है जो उसे पाप करने का आदेश देता है, यह जिन मनुष्य के संपूर्ण भेदों से अवगत होता है जिनसे अन्य व्यक्तिगण अज्ञानी होते हैं, उदाहरण स्वरूप: यदि किसी मनुष्य की कोई वस्तु गुम हो जाए तो वह संगी जिन गुम हुई वस्तु से अवगत होता है, क्योंकि वह सदैव उस के साथ रहता है, यदि यह व्यक्ति भविष्यवक्ता से संपर्क करे एवं गुम हुए वस्तु के संबंध में उससे पूछताछ करे तो यह जिन उस भविष्यवक्ता को गुम हुए वस्तु के स्थान की सूचना दे देता है, फिर भविष्यवक्ता मनुष्य को उस स्थान की सूचना देता है, एवं उसके साथ १०० झूठ मिलाकर बोलता है, इस कारणवश यदि इंसान हेतु इस सत्य बात में यह भविष्यवक्ता सत्य प्रदर्शित होता है तो वह उसके संपूर्ण बातों को सत्य मानने लगता है, एवं यह भ्रम रखने लगता है कि यह परोक्ष ज्ञान से अवगत है, जबकि वास्तव में उसके इस विशेष संबंध में केवल उस वस्तु की सूचना दी जिसके बारे में उसके संगी जिन ने उसे बताया, उदाहरण स्वरुप वह बात जो उसके एवं उसकी पत्नी के बीच होती है उसके कर्म स्थान के

बारे में, उसकी माता का नाम उसके प्रदेश का नाम एवं उसके घर का पता आदि एवं इनके अतिरिक्त वह जानकारियां जो इस जिन को पता होती हैं।

अल्लाह के दासो! भविष्यवक्ता जिस दुष्टदेव से संबंध रखता है वह उससे जो सेवा प्राप्त करता है उसके बदले वह उसकी उपासना करता है एवं दुष्टदेव का यही लक्ष्य है, आदम की वंश के पीछे केवल इस लिए पड़ा हुआ है कि उसे मार्ग-भ्रष्ट कर दे, यही उसका कर्म एवं यही उसका संदेश है, उसके धोके की जाल में भविष्यवक्ता जादूगर एवं ज्योतिषी सभी फंस जाते हैं, ये मनुष्य में से दुष्टदेव हैं, जबकि वो जिनों में से दुष्टदेव हैं, इन संपूर्ण दुष्ट देवों से हम अल्लाह के शरण की मांग करते हैं।

अल्लाह के दासो! एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जो लोग सही दिशा-निर्देश अनुसार झाड़-फूंक एवं उपचार करते हैं एवं जादूगरों और भविष्यवक्ताओं के कर्तव्य से अवगत हैं उनमें से किसी का कहना यह है कि: यदि आप भविष्यवक्ता का भेद खोलना चाहते हैं तो उससे ऐसी वस्तु के संबंध में पूछताछ करें जिस से आप अवगत नहीं हैं, क्योंकि जिस से आप अवगत नहीं होंगे आपका संगी जिन भी उस चीज़ से अवगत नहीं होगा इस कारणवश भविष्यवक्ता कुछ पता नहीं कर पाएगा। उदाहरण स्वरूप आप धरती से कुछ कंकरियां

उठा लीजिए एवं अपने मुट्ठी बंद कर लीजिए, फिर भविष्यवक्ता से पूछिए कि मेरे हाथ में कितनी कंकरियां हैं, वह इसका उत्तर नहीं दे पाएगा, एवं भाग खड़े होने का प्रयास करेगा, क्योंकि आपका संगी जिन भी वह नहीं जानता तो भविष्यवक्ता कहां से बता पाएगा!!!

सारांश यह कि भविष्यवक्ता अपने संपूर्ण धंधों में जिनों से सहायता प्राप्त करता है, संपूर्ण घटनाओं की जानकारी हेतु उसकी ओर जाता है, फिर वह कुछ बातें उसके कान में डाल देते हैं, एवं इस आधार पर भविष्यवक्ता अनुमान लगाकर जो सूचना देता है यदि वह सूचना सत्य स्थित हुई तो मनुष्य भ्रम करने लगता है के भविष्यवक्ता को कुछ ना कुछ परोक्षज्ञान प्राप्त है, फिर वह उसके षड्यंत्र का शिकार हो जाता है, अज्ञानी उसे अभिव्यक्ति एवं चमत्कार पर निर्भर करता है, एवं यह समझता है कि भविष्यवक्ता अल्लाह के मित्रों में से है जबकि वह दुष्टदेव के मित्रों में से है, जैसा कि सूरह-ए-शुअ़रा में अल्लाह का कथन है:

هَلۡ أُنَبِّئُكُمۡ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَٰطِينُ. تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ. يُلۡقُونَ ٱلسَّمۡعَ وَأَكۡثَرُهُمۡ كَٰذِبُونَ.

अर्थात: क्या मैं तुम्हें सुचित करूं कि दुष्टदेव किस पर अवतरित होते, वह प्रत्येक असत्य एवं पापी पर अवतरित होते हैं, उचटती हुई सुनी सुनाई पहुंचा देते हैं एवं उनमें से अधिकतम झूठे है।

एकेश्वरवादों के समूह! ज्योतिषी भी परोक्षज्ञान का दावा करते हैं, ज्योतिषी वह है जो अपने व्यक्तिगत भ्रम से सितारों की गति की माध्यम से भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, उदाहरण स्वरूप वायु बहने के समय, वर्षा होने के समय, सर्दी एवं गर्मी के ऋतु एवं मोलों के परिवर्तन इत्यादि की जानकारी, उनका दावा है कि सितारों का अपने आकाश में चक्कर लगाने एवं उनका आपस में एक दूसरे से मिलने को देखकर वो इन सब बातों का पता लगाते हैं, एवं यह कि निचले संसार में उसका प्रभाव पड़ता है, इसे प्रभावशाली ज्ञान के नाम से याद किया जाता है, इसका दावा करने वाले को हाज़ी (ज्योतिषी) भी कहा जाता है, ऐसे रूप में ज्योतिषी सितारों को संबोधित करता है एवं दुष्टदेव उसके समक्ष वह चित्र प्रकट करता है जिसके माध्यम से वह उपरोक्त उल्लेख किए गए बातों का पता चलाता है, यह सब अनर्गल प्रलाप है।

अल्लाह के दासो! ज्योतिषी विज्ञान में यह बात भी सम्मिलित है कि भविष्य की घटनाओं का पता चलाने हेतु सितारों के चक्कर के साथ-साथ "अबजद" अक्षरों का भी प्रयोग किया जाए, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअंहुमा के इस कथन का यही अर्थ है: एक समूह (अबूजाद) का प्रयोग करता है एवं सितारों पर नज़र रखता है, एवं जो व्यक्ति

ऐसा करता है मेरे विचार से परलोक में उसके हेतु कोई भागीदारी ना होगी।

(इस कथन को अब्दुल रज़्ज़ाक़ ने अल्-मुसन्नफ़: १९८०५ में रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए गए शब्द उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त,बैहक़ी ने अल्-सुननुल्-कुबरा: ८/१३९ में रिवायत किया है।)

ज्योतिषी विज्ञान का एक दृश्य यह भी है जिसका दावा कुछ अंतरिक्ष विज्ञान करते हैं कि मनुष्य के भविष्य में जो कुछ प्रकट होने वाला है उस से वो अवगत हैं, एवं इस दावे का समाचार पत्र के माध्यम से प्रचार भी करते हैं, उसका दावा है कि जो व्यक्ति सितारों के उदय होते समय जन्म पाया उदाहरण स्वरूप बुर्ज-ए-अ़क़रब के समय जन्म पाया तो वह दुर्भाग्यवान होगा, एवं इसी प्रकार जो बुर्ज-ए-मीज़ान के समय जन्म पाया तो वह सौभाग्यशाली होगा। इत्यादि...

अल्लाह के दासो! जादू का जो आदेश है वही आदेश ज्योतिषी ज्ञान का भी है, इन दोनों के बीच समानता का कारण यह है कि यह दोनों दुष्टदेव से संबंधित हैं इसका साक्ष्य: इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा से मरवी यह रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने ज्योतिषी का कोई ज्ञान सीखा, तो उसने जादू का

एक भाग सीखा, फिर जो इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।

(सहीह मुस्लिम: २२३०)

ज्योतिष ज्ञान को प्रभावशाली ज्ञान के नाम से भी याद किया जाता है अर्थात धरती के घटनाओं पर सितारों के चक्कर का प्रभाव, उनके कथन: (उसने जादू का एक भाग सिखा) का अर्थ यह है कि वह जादू की एक प्रकार का शिकार हो गया, आपके कथन: (फिर जो इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।) का अर्थ है: ऐसा करने वाला जितना ज्योतिष ज्ञान सीखेगा मानो उतना ही उसने जादू का ज्ञान सीखने में बढ़ोतरी की।

विष्यवक्ताओं, ज्योतिषी विज्ञानों के निकट जाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह की दासो! इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से एक यह है कि वह सकारात्मक शगुन लेने का आदेश देता है, मनुष्य को ऐसे कर्मों की ओर दिशा-निर्देश देता है जिन में उसकी सांसारिक एवं परलोक के जीवन की भलाइयां छुपी हुई हों, यह धर्म बहुदेववाद, अनर्गल प्रलाप एवं धोखाधड़ी से वंचित रहने का आदेश देता है, इसी कारणवश इस्लाम में दुष्टदेव के द्वारों के सामर्थ्य को बंद किया

है, इसी कारणवश भविष्यवक्ता के निकट जाने को अवैध स्थित किया है, एवं भविष्यवक्ता के निकट जाने वाले को कठोर दंड देने की बात की है, चाहे केवल प्रश्न करने हेतु ही क्यों ना हो, मुस्लिम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी सफ़ीया रज़िअल्लाहुअ़ंहा से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी गुप्त बातों की सूचना देने वाले (भविष्यवक्ता) के पास आए, एवं उससे किसी वस्तु के संबंध में प्रश्न करे, तो ४० रातों तक उस व्यक्ति की नमाज़ को स्वीकृति नहीं दी जाएगी। (सहीह मुस्लिम: २२३०)

इसमें जो धमकी आई है वह उस व्यक्ति पर लागू होती है, जो गुप्त बातों की सूचना देने वाले भविष्यवक्ता के निकट जाए, एवं उससे केवल प्रश्न करे, चाहे वह उसे सत्य ना माने, तो भी ऐसे व्यक्ति की नमाज़ ४० दिनों तक स्वीकार नहीं की जाएगी, परंतु काफ़िर नहीं होगा इस कारणवश वह इस्लाम के घेरे से बाहर नहीं होगा

परंतु जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने वाले एवं गुप्त की सूचना देने वालों से प्रश्न करे, एवं उसकी बात को सत्य माने, तो वह इस्लाम के घेरे से बाहर आ जाता है, क्योंकि जब वह उसे सत्य मानता है तो इस से यह बात प्रकट होती है कि उसने परोक्षज्ञान की विशेषता में उन्हें अल्लाह का साझी स्थित किया, जबकि यह विशेषता अल्लाह

ही की है, इस प्रकार वह क़ुरआन को असत्य भी मानता है एवं कुफ़्र भी कर बैठता है -अल्लाह का शरण- अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति भविष्यवक्ता एवं परोक्षज्ञान का दावा करने वाले के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा।

(इस हदीस को अहमद: ४/४२९ इत्यादि ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन स्थित किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया या जिसके लिए अपशगुन लिया गया, जिसने भविष्यवाणी की या जिसके लिए भविष्यवाणी की गई, जिसने स्वयं जादू किया अथवा जिसके लिए जादू किया गया वह हम ऐसे नहीं है, एवं जो व्यक्ति भविष्यवक्ता का के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा (कुफ़्र किया)।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२)

में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उससे प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि इससे हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सोंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है...अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउ़ज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा से रिवायत किया है, जैसा कि कश्फुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेइ़स्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीहा: (२१९५) में सहीह स्थापित किया है।}

अल्लाह के दासो! जिनके बीच भविष्यवाणी प्रचारित एवं प्रसारित है वह सूफिया हैं, उनके अधिकतम धार्मिकगुरु भविष्यवक्ता अथवा भविष्यवाणी करने वाले हैं, क्योंकि वे अपने धार्मिकगुरु हेतु ऋषि एवं चमत्कारी होने का दावा करते हैं, परोक्षज्ञान का दावा उनके

निकट ऋषि एवं चमत्कारी होने की आवश्यकताओं में से हैं, जिसे वो "कश्फ़" का नाम देते हैं, इसे परोक्षज्ञान का नाम नहीं देते ताकि उनका अपमान ना हो।

अल्लाह के दासो! भविष्यवाणी की अवैधता के अनिवार्य होने के उल्लेख हेतु भविष्य वक्ताओं के निकट जाने वालों के कुफ़्र को स्पष्ट करने हेतु यह एक लाभदायक प्रस्तावना है, चाहे वास्तव में हो अथवा उसे अपना कर हो, अथवा केवल हृदय से इस कर्म पर अपनी सहमति अस्पष्ट करने से हो, यह सारे कुफ़्रिया कर्म हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है !

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبى بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि भविष्यवाणी में "तर्क़" भी सम्मिलित है, जो कि एक प्रकार की भविष्यवाणी ही है, जिसके सहायते से अरब समुदाय के लोग अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से गुप्त बातों का ज्ञान प्राप्त करते थे, "तर्क़" तरीक़ से लिया गया है, "तर्क़ुल्-अरज़ि यतरुक़ुहा" उस समय कहा जाता है जब धरती पर चले, वो धरती पर कुछ लकीरें खींचते हैं, मानो वह उस पर चल रहे हों, फिर धरती पर खींची गई उन लकीरों से जो परोक्षज्ञान स्पष्ट होता है वो उसकी सूचना देते हैं।

"रिमाल" भी भविष्यवाणी का ही एक प्रकार है, इसकी विधि होती है कि, रिमाल अपने हाथ से रेत पर लकीर खींचता है, फिर उस के माध्यम से परोक्षज्ञान का दावा करता है, इसे रिमाल के नाम से जाना जाता है।

भविष्यवाणी में कंकर बाज़ी भी सम्मिलित है, जब प्रश्न करने वाला भविष्यवाणी करने वाले से किसी घटना के संबंध में प्रश्न करता है तो वह कुछ कंकरिया निकालता है, एवं विशेष विधि से उस पर मारता है, के पश्चात -अपने असत्य दावे के आधार पर- उस प्रश्न करने वाले का उत्तर पता चल जाता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार "फ़िनजान" पढ़ना भी है, अर्थात: कॉफी का कप अथवा प्याला, तो कप में जो काॅफी बच जाती है वही अधिक होती है, उस पर भविष्यवक्ता अपना ध्यान केंद्रित करता है, उस के माध्यम से पहले के आसपास लकीरें खींचता है, फिर उसके संबंध में सूचना देता है, एवं दावा करता है कि ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार अग्नि को पढ़ना भी है, कभी कभार भविष्यवक्ता अग्निज्वाला के रूप एवं अग्नि के लौ की सहायता से अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से भविष्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार हथेली पढ़ना भी है, जिसमें भविष्यवक्ता हथेली पर पड़े लकीरों, उन लकीरों के टेढ़े पन एवं आपसी संबंध पर विश्वास करता है, फिर यह दावा करता है कि ऐसा ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी में "इ़याफ़ा" (पक्षियों को आकर अपशगुन लेने की विधि) भी सम्मिलित है, इसकी विधि है कि पक्षियों को उड़ाया जाता है, यदि वह दाहिनी ओर उड़े, मंगलकारी लो, एवं बाएं ओर उड़े तो कहते हैं अपशगुन लो, यह भविष्यवाणी है।

निःसंदेह "इ़याफ़ा" एक असत्य कर्म है, क्योंकि पक्षी अल्लाह की सृष्टियों में से एक है, उसके अंदर प्रभाव एवं उपाय की कोई योग्यता नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला उसके संपूर्ण चीज़ों का उपाय करता है एवं उसके पालन-पोषण की व्यवस्था करता है।

أَلَمۡ يَرَوۡاْ إِلَى ٱلطَّيۡرِ مُسَخَّرَٰتٖ فِي جَوِّ ٱلسَّمَآءِ مَا يُمۡسِكُهُنَّ إِلَّا ٱللَّهُۚ.

अर्थात: क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञाकारी बनकर वातावरण में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं थामे हुए है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सर्वश्रेष्ठ का कथन है :

أَوَلَمۡ يَرَوۡاْ إِلَى ٱلطَّيۡرِ فَوۡقَهُمۡ صَٰٓفَّٰتٖ وَيَقۡبِضۡنَۚ مَا يُمۡسِكُهُنَّ إِلَّا ٱلرَّحۡمَٰنُۚ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَيۡءم بَصِيرٌ.

अर्थात: क्या यह अपने ऊपर खोले हुए एवं (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (वायु एवं वातावरण) में थामे हुए है, नि:संदेह प्रत्येक वस्तु उसकी दृश्य में है।

भविष्यवाणी में अपशगुन लेना भी है, इसमें समान अपशगुन सम्मिलित है, चाहे वह देखी हुई वस्तु से हो अथवा सुनी हुई बात से, इसका अर्थ है पक्षियों को उड़ा कर उसके उड़ने की दिशा से

अपशगुन लेना, यदि दाएं ओर उड़े तो मंगलकारी लेना, एवं बाय ओर उड़े तो अपशगुन लेना, शब्दकोश के अनुसार अपशगुन (तियरह) एवं इ़याफ़ा दोनों का अर्थ एक ही है, परंतु इसमें विस्तार है, इसलिए कि इसमें अपशगुन के संपूर्ण प्रकार सम्मिलित हैं, उदाहरण स्वरूप उल्लू एवं कौवा को देखकर अपशगुन लेना, १३ की संख्या से अपशगुन लेना, काना लंगड़ा एवं अपाहिज को देखकर अपशगुन लेना, जब कोई काना मनुष्य को देखे तो कहे आज का दिन बुरा है, इस कारणवश अपना प्रतिष्ठान बंद कर दे एवं क्रय-विक्रय ना करे, मानो उसे विश्वास हो चला कि आज के दिन उस पर कोई दुख प्रकट होने वाला है, यदि मनुष्य को दाहिने हाथ में खुजलाहट हो तो कहे कि ऐसा होगा, यदि बाएं हाथ में खुजलाहट हो तो कहे वैसा होगा, यह एवं इन जैसी संपूर्ण चीज़ें जिनमें अल्लाह ने अपशगुन नहीं रखा है, परंतु लोगों ने अपशगुन बना लिया है, एवं उस दिन को अपने हेतु अशुभ मान लिया है, जबकि अल्लाह ने उसे अशुभ दिन नहीं बनाया, मानो उस ने यह दावा किया कि उस दिन कुछ होने वाला है, इस ज्ञान में वो अल्लाह के साझी हैं, वह इस प्रकार की उन्होंने ऐसी चीज़ों पर विश्वास किया जिनको उन्होंने कारण स्थापित किया जो कि वास्तव में उस अरुचिकर चीज़ के कारण नहीं है, जिनके स्थापित होने की वो आशा करते हैं।

अपशगुन अवैध है बल्कि बहुदेववाद है, इसका साक्ष्य अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा की यह हदीस है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति को अपशगुन ने अपनी आवश्यकता पूरी करने से रोक दिया, उस ने बहुदेववाद किया, सहाबा ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत: इसकी भरपाई (कफ़्फ़ारा) क्या है? आप ने फ़रमाया: यह कहना कि :

اللهم لا خير إلا خيرك ولا طير ألا طيرك ولا إله غيرك.

अर्थात: तेरी प्रदान की गई भलाई के अतिरिक्त कोई भलाई नहीं, तेरे स्थापित किए गए अपशगुन के अतिरिक्त कोई अपशगुन नहीं, एवं तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं।

(इस हदीस को अहमद: २/२२० ने रिवायत किया है एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे हसन स्थापित किया है।)

अपशगुन के अवैध होने का एक साक्ष्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस है: छूत लग जाना, अपशगुन लेना, उल्लू, एवं सफ़र के महिने को अशुभ मानने की कोई वास्तविकता नहीं।

(इस हदीस को बुख़ारी: ५७०७, एवं मुस्लिम: २२२० ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअ़ंहु से रिवायत किया है।)

आपका यह कथन: "अपशगुन लेने की कोई वास्तविकता नहीं" स्पष्ट रूप से अपशगुन को नकारता है।

सारांश यह कि भविष्यवाणी के कई प्रकार हैं, परंतु संपूर्ण भविष्यवक्ताओं में जो समानता है वह है परोक्षज्ञान का दावा करना, किंतु इनकी विधियां विभिन्न हैं, इनमें से कुछ का दुष्टदेवों से संबंध होता है, कुछ लोग केवल इसका दावा करते हैं ताकि लोगों को धोखे के जाल का शिकार बना सकें, अल्लाह हमें उनके बुराइयों से सुरक्षित रखे।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.

अर्थात: " अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء الأئمة الحنفاء وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडी पने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह हम तुझसे शांति पूर्वक जीवन विस्तार पूर्वक रोज़ी-रोटी एवं पुण्य कर्म के लिए प्रार्थना करते हैं!

हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिन से अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिनसे हम अवगत हैं अथवा जिनसे हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे!

हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अल्-रसी

अनुवादक: तारिक़ बदर सनाबिली

موضوع الخطبة : الناقض العاشر: الإعراض عن دين الإسلام، لا يعلَمه ولا يعمل به

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_٤T)

शीर्षक:

दसवां भंजक: (इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न उस का ज्ञाप प्राप्त करना और न उस पर अमल करना)

الإعراض عن دين الإسلام، لا يعلَمه ولا يعمل به

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

इस्लामी शरीअ़त का अनुगमन करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उस का भय सवैद अपने हृदय मी जीवित रखो,उस का आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि अल्लाह तअ़ाला ने अपने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुगमन का आदेश पवित्र क़ुरान में 33 स्थानों पर दिया है,[40]उदाहरण स्वरूप अल्लाह का यह कथन:

﴿وما آتاكم الرسول **فخذوه** وما نهاكم عنه فانتهوا﴾

---

[40] **शैखुल इस्लाम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह ने तीस से अधिक स्थानों पर क़ुरान में अपने रसूल के अनुगमन का आदेश दिया है,आप के अनुगमन को अपने अनुगमन के साथ बयान किया है,आप के विरोध को अपने अवज्ञा के साथ बयान किया है,इसी प्रकार आप के नाम को अपने नाम के साथ बयान किया है,अत: जहां अल्लाह का ज़िक्र होता है वहां आप का भी ज़िक्र होता है।"مجموع الفتاوى" (19/103),इसी प्रकार से आजुरी ने "الشريعة" पृष्ठ संख्या:49 में इस बात का उल्लेख किया है।**

अर्थात:और जो प्रदान कर दें रसूल,तुम उसे ले लो और रोक दें तूम को जिस से तो तुम रुक जाओ।

तथा फरमाया: ﴿قل **أطيعوا** الله وأطيعوا الرسول فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين﴾

अर्थात:हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अधिक फरमाया: ﴿يا أيها الذين آمنوا **أطيعوا** الله ورسوله ولا تولوا عنه وأنتم تسمعون

अर्थात:हे ईमान वालो!अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उस के रसूल के।और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿يا أيها الذين آمنوا أطيعوا الله **وأطيعوا** الرسول وأولي الأمر منكم﴾

अर्थात:हे ईमान वालो!अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो,और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो।

इसी प्रकार से अनेक ह़दीसें आई हैं जो आप की आज्ञा एवं अनुगमन करने,और आप के मार्ग पर चलने और आप के आदेश एवं निषेध का आदर करने पर प्रोत्साहित करती हैं,उदाहरण स्वरूप अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की यह ह़दीस कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मेरी उम्मत के सारे लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे किन्तु जो इंकार

करेगा।सह़ाबा ने पूछा:अल्लाह के रसूल!वह कौन है जो इंकार करेगा?आप ने फरमाया:जिस ने मेरी आज्ञा की वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की तो उस ने नि:संदेह इंकार किया।[41]

आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस ने मेरा अनुगमन किया उस ने अल्लाह का अनुसरण किया और जिस ने मेरा अवज्ञा किया उस ने अल्लाह का अवज्ञा किया।[42]

तथा आप रज़ीअल्लाहु अंहु अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं कि आप ने फरमाया:जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के रोकूं तो रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के करने का आज्ञा दूं तो अपनी शक्ति अनुसार उसका पालन करो।[43]

अबूसईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:शपथ है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है,तुम सब के सब स्वर्ग में अवश्य प्रवेश करोगे सिवाए उस के जिस ने इंकार किया और अल्लाह के अनुसरण से उसी प्रकार मुँह फेरा जिस प्रकार से ऊंट (अपने स्वामी से मुँह फेर कर) बिदक जाता

---

[41] सह़ी बोखारी (7280)

[42] सह़ी बोखारी (7137) सह़ी मुस्लिम (1835)

[43] सह़ी बोखारी (7288) सह़ी मुस्लिम (1337)

है,सह़ाबा ने पूछा:ऐ अल्लाह के रसूल!स्वर्ग में प्रवेश होने से कौन इंकार कर सकता है?

आप ने फरमाया:जिस ने मेरी अनुसरण किया वह स्वर्ग में प्रवेश होगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने इंकार किया।[44]

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का परिचय एवं यह स्पष्टीकरण कि वह इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का विपरीत है इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न इसे सीखना और न उस पर अमल करना,और धर्म के उन सिद्धांत को सीखने और उस पर अ़मल करने से मोकल्लफ/बाध्य (धर्मिक रूप से उत्तरदायी) बंदा को रोकना जिन के बिना इस्लाम सही नहीं होता।अपने कान और दिल के द्वारा इस्लाम धर्म से मुँह मोड़ना,न उस की पुष्टि करना,न उसे झुठलाना,न उस से शत्रुता रखना और शत्रुता दिखाना,और न उस की शिक्षाओं पर कान धरना।[45]जैसे ईमान के स्तंभों और उस के संबंधित

---

[44] इस ह़दीस को इब्ने माजा (1/196-197) ने ह़दीस संख्या (17) के अंतर्गत रिवायत किया है,इस के वर्णनकर्ता मुस्लिम के वर्णनकर्ता हैं,इस ह़दीस के कुछ शवाहिद भी हैं जो उसे सशक्त करते हैं जैसे अबूहोरैरा की उपरोक्त ह़दीस और अबूहोरैरा की वह ह़दीस जिसे अह़मद (2/361) आदि ने रिवायत किया है,इसकी सनद शैखैन की शर्त पर है जैसा कि ह़फिज़ ने में ह़दीस संख्या (7280) के विवरण में उल्लेख किया है,उपरोक्त ह़दीस पर शैख शेऐब की टिप्पणी संक्षेप में वर्णित है।

[45] यह इब्नुल क़य्यिम का क़थन है जो "مدارج السالكين" (1/338) में वर्णित है।

चीज़ों को सीखना,और उन वंदनाओं का तरीका जानना जो अल्लाह पर ईमान लाने से अनिवार्य हो जाते हैं,जैसे नमाज़,ज़कात,और अल्लाह व रसूल का प्रेम आदि,तो यह इस्लाम भंजकों में से है।अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे,इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿**ومن أظلم** ممن ذُكِّـر بآيات ربه ثم أعرض عنها إنا من **المجرمين** منتقمون﴾

अर्थात:और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अर्थात उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कोई नहीं जो अल्लाह की आयतों से मुँह फेर ले,अल्लाह ने उसे अत्याचारी का नाम दिया है,अत: जो व्यक्ति अपने शरीर के अंगों से कोई अ़मल नहीं करता,केवल ज़बान से शहादतैन (لا إله إلا الله محمد رسول الله**) को स्वीकारने पर बस करता है,तो वह काफिर है,उसे विद्धान (विशेष अ़मल को छोड़ने वाले) का नाम देते हैं,कुछ लोग उसे धर्म से अप्रसन्न कहते हैं,वास्तविकता यही है कि शरीअ़त से मुँह फेरने वाले का दिल दूषित होता है,क्योंकि यदि उस के दिल में ईमान की सौजन्य होती तो उस के शरीर के अंग अ़मल करते,इस लिए कि दिल राजा है और शरीर के अंग उस के सेना हैं,जो उसका अवज्ञा नहीं**

करते,किन्तु जब दिल ही दूषित हो जाए तो शरीर के अंग भी बेकार हो जाते हैं,हम अल्लाह से सुख की दुआ़ करते हैं।[46]

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का अत्यधिक निवारण

अल्लाह के बंदो!अनेक आयतों में अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने से रोका गया है,अल्लाह का फरमान है:

﴿ومن **أعرض** عن ذكري فإن له معيشة ضنكا ونحشره يوم القيامة أعمى﴾

अर्थात:तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से,तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग) होगा,तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿**ومن أظلم** ممن ذُكِّـر بآيات ربه ثم أعرض عنها إنا من **المجرمين** منتقمون﴾

अर्थात: और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अल्लाह अधिक फरमाता है:

---

[46] **देखें:** "مجموع الفتاوى" **(7/204 और उस के पश्चात) उन्होंने इस अध्याय में पूर्व के ईमामों के वर्णनों का उल्लेख किया है।**

﴿ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه **فأعرض** عنها ونسي ما قدمت يداه﴾

अर्थात:और उस से बड़ा अत्याचीरी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये?

अल्लाह ने फरमाया: (इस से बड़ा अत्याचारी कौन है) का अर्थ है:कोई व्यक्ति इससे बड़ा अत्याचारी नहीं है।

अल्लाह का फरमान है: ﴿فإن **أعرضوا** فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود﴾

अर्थात:फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

अधिक फरमाया: ﴿ومن **يعرض** عن ذكر ربه يسلكه عذابا صَعَدا﴾

अर्थात:और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से,तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

अर्थात:सख्त दुष्कर,कष्टदायक और त्रासिक यातना देगा।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿قل أطيعوا الله والرسول فإن **تولوا** فإن الله لا يحب الكافرين﴾

अर्थात: हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने वाले की बुद्धि और विचार पर शैतान प्रभावी होता है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने के कारण शैतान मुनुष्य का हृदय एवं विचार पर प्रभावी हो जाता है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿ومن يعش عن ذكر الرحمٰن نقيض له شيطانا فهو له قرين * وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون﴾

अर्थात:और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

- **अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों का गुण है,अल्लाह तआ़ला फरमाता है:**

﴿والذين كفروا عما أنذروا **معرضون**﴾

अर्थात:तथा जो काफिर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुए हैं।

प्रथम उपदेश की समाप्ति:

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त के अनुसरण की अनिवार्यता और उससे मुँह फेरने की निवारण के विषय में एक लाभदायक प्रक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि अल्लाह के धर्म का अनुसरण अनिवार्य है,उस का तरीका यह है कि उस का ज्ञान प्राप्त किया जाए और उस पर अ़मल किया जाए,मुसलमान को चाहिए कि इस्लाम धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करे और उन पर अ़मल करे,उन सिद्धांतों में इस्लाम के इस्लाम के पांच स्तंभ और ईमान

के छे स्तंभ सूची के शीर्ष पर हैं,इस्लाम विरोधी गतिविधियों में पड़ने से सचेत रहे,जिन में इस्लाम के दस भंजक सूची के शीर्ष पर हैं,उस के पश्चात उन छोटे एवं बड़े पापों की श्रेणी आती है जिन से ईमान में कमी होती है,उन से भी सचेत रहे,क्योंकि यह पाप यद्यपि धर्म से बाहर नहीं करते किन्तु धर्म की संपूर्णता के विरुद्ध अवश्य हैं और मनुष्य को आखेरत की यातना का पात्र बना देते हैं।

अ़मल एवं अ़मल का बदला व पुण्य

अल्लाह तआ़ला ने उस व्यकित से बड़ा बदला एवं पुण्य का वादा किया है जो शरीअ़त की ओर ध्यान मग्न होते,उसे सीखते और उस पर अ़मल करते हैं,ज्ञान की सदगूण नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में आई है:जो व्यक्ति उस मार्ग पर चलता है जिस में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है जो अल्लाह तआ़ला उस के द्वारा उस के लिए स्वर्ग का मार्ग आसान कर देता है,अल्लाह के घरों में से किसी घर में लोगों का कोई समूह प्रवेश नहीं करता,वे क़ुरान का सस्वर पाठ करते हैं और उसका पाठ करते हैं मगर उन पर सकीनत(संतुष्टि एवं हृदय की शांति)अवतरित होता है और (अल्लाह का) कृपा उनको ढांप लेता है और देवदूत उन को अपने

घेरे में ले लेते हैं और अल्लाह तआ़ला अपने समीपवर्तियों में जो उस के पास होते हैं उनका जिक्र करता है।[47]

रही बात अ़मल की सदगूण की तो अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह अल्लाह तआ़ला का फरमान है:....मेरा बंदा जिन जिन इ़बादतों (वंदनाओं) के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उन में से कोई इ़बादत मुझे इतनी पसंद नहीं जितनी वह इ़बादत पसंद है जो मैं ने उप पर फर्ज़ किया है।मेरा बंदा नफिल के द्वारा भी मुझ से एतना निकट हो जाता है कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूं और जब मैं उससे प्रेम करने लगता हूं तो मैं उस का कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है,उस की आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है।उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूं जिस से वह चलता है।यदि वह मुझ से मांगे तो मैं उस देता हूं।मैं किसी चीज़ में संदेह नहीं करता जिस को मैं करने वाला होता हूं,जो तरदुद मुझे का प्राण निकालते समय होता है,वह मृत्यु के कारण कष्ट पसंद नहीं करता मुझे भी उसे कष्ट देना अच्छा नहीं लगता है।[48]

द्वतीय उपेदश की समाप्ति

---

[47] इस ह़दीस को मुस्लिम (2699) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[48] सह़ी बोखारी (6502)

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليم

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी